समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अगस्त २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक ८ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

२५० लाख गुलाब के फूल भारत निर्यात करता है
संसार का हर कोना इससे सुगन्धित है

दुनिया बदल रही है

तकनीकी बदल रही है

मुनीम जी नहीं हैं

कम्प्यूटर जी हैं

व्यापार के तरीके बदल रहे हैं

उद्योग+उद्योग+उद्योग = उद्योग

रूस व चीन से मार्क्सवाद नदारद

प.बंगाल व भारत से राष्ट्रीयकरण नदारद

आयुर्वेदिक दवाइयां

अब विदेशों में भी

सामाजिक कानून कायदे

पुन: वैदिक युग की ओर

आदमियों के रिश्ते

नये रूपकों में

संसार का एक कोना से दूसरा कोना

वर्षों व महीनों का नहीं कुछ घण्टों का सफर

२०२० तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था
हो सकता है भारत

आपका दृष्टिकोण क्या है ?

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Govind Steel Company Ltd.

FOUNDERS ENGINEERS

WORKS :
100/1, GRAND TRUNK ROAD
RISHRA, HOOGHLY- 712248
PHONE : 2672-1144, 2672-2010
FAX : 2672-5978

REGISTERED OFFICE :
219, CHITTARANJAN AVENUE
KOLKATA - 700 006, INDIA
PHONE : 2530-9445, 30904122
FAX : 91-33-2530-9368
E.MAIL : govindsteel@vsnl.com

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
अखिल भारतीय समिति की बैठक की सूचना	४
जनवाणी	५-६
कविता - आगे कदम बढ़ाना / *श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान*	६
संपादकीय	७-८
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	९
...आज के युवा वर्ग की आवश्यकता / *श्री सीताराम शर्मा*	१०
२१वीं शती के प्रारंभ की ओर / *श्री भंवरमल सिंघी*	१०
अनिवासी भारतीयों की नई पीढ़ी का भविष्य / *श्री इंद्रचंद्र संचेती*	११-१२
मारवाड़ी युवा समाज २०वीं और २१वीं शताब्दी के तराजू पर / *श्री आत्माराम काजड़िया*	१२
क्रांतदर्शी मारवाड़ी युवक के लिए / *श्री सांवरमल भीमसरिया*	१३-१४
कविता : चाल मत चाल सूं बारै / श्री लक्ष्मण दान कविया	१४
२१वीं सदी को नोच रहा है नंगापन / *श्री जुगलकिशोर जैथलिया*	१५
२१वीं शताब्दी में मारवाड़ी समाज का लक्ष्य / *श्री दुर्गाप्रसाद नाथानी*	१६
कविता : अनंत का पथ / *श्रीमती इंदु चांडक*	१६
सामाजिक एकता व राजनीति / *श्रीमती विमला डोकानिया*	१७
२१वीं सदी में मारवाड़ी समाज / *श्री लोकनाथ डोकानिया*	१७
२०वीं शताब्दी की सम्माज की क्रांतिकारी व विशिष्टतम संस्कृति को क्यों विस्मृत कर रहे हैं / *श्री रामनिवास लाखोटिया*	१८-१९
दो मुक्तक / *स्वामी रामतीर्थ/श्री जगदीश गुप्त*	१९
सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में सजग हो युवक समाज / *श्री आत्माराम सोंथालिया*	२०-२१
कविता : कुछ अपना / *श्री विष्णुदत्त जोशी*	२१
परिवर्तन के दर्पण में मारवाड़ी समाज / *श्री शम्भू चौधरी*	२२

युग पथ चरण

❐ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की बैठक का कार्यवृत्त, ५९वां स्वाधीनता दिवस समारोह सहित पश्चिम बंग, बिहार, पूर्वोत्तर, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखण्ड प्रांतीय सम्मेलनों की रिपोर्टों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की भी महत्वपूर्ण रिपोर्टें। २३-३४

समाज विकास

अगस्त, २००५

वर्ष ५५ ● अंक ८

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री मानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

Telegram : APAKASAMAJ Estd. 1935 Phone : 2268 0319

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

152B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700007

दिनांक : १६.८.०५

सूचना

अखिल भारतीय समिति के सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की आगामी बैठक रविवार ११ सितम्बर २००५ को प्रात: १० बजे निम्नलिखित स्थान पर होगी। आपसे सादर अनुरोध है कि इस महत्वपूर्ण बैठक में उपस्थित रहने की कृपा करें।

स्थान : साल्टलेक सांस्कृतिक संसद
सी.ए. ४९, साल्टलेक, सेक्टर-१, कोलकाता- ६४
फोन नं. २३२१ ७४१२, २३३४ २९३४

विचारार्थ विषय :

१. गत बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन
२. महामंत्री की रपट
३. प्रादेशिक सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति पर विचार-विमर्श
४. सम्मेलन के भावी कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव व निर्देश
५. अन्य विषय जो अध्यक्ष की अनुमति से बैठक के सम्मुख रखें जाये।

भवदीय
भानीराम सुरेका
मानद् राष्ट्रीय महामंत्री

नोट : अपने आगमन एवं प्रस्थान व आवास की सूचना एवं अन्य स्थानीय जानकारी हेतु निम्न पदाधिकारियों से सम्पर्क किया जा सकता है।

श्री लोकनाथ डोकानिया
अध्यक्ष, पश्चिम बंग प्रादेशिक मा. सम्मेलन
फोन नं. २२४१ २६९७ (नि.) २३३४ ४२३७/८९८८

मोबाईल नं. ९३३०९५२७८२
१७४, चित्तरंजन एवेन्यू, २ तल्ला
कोलकाता- ७०० ००७

श्री गोपाल अग्रवाल
मंत्री, पश्चिम बंग प्रादेशिक मा. सम्मेलन
फोन नं. २२११ ९४०० (नि.) २५२१ २१८६

मोबाईल नं. ९३३१०१६९५०
५०, वेस्टन स्ट्रीट, रूम नं. ३०१
कोलकाता- ७०० ०१२

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

समाज विकास जून अंक प्राप्त हुआ। विस्तृत रूप में अपने समाज की कई जानकारियां प्राप्त हुईं जो अपने आप में समाज विकास में नया अध्याय जोड़ने की कड़ी कही जाएगी। सीतारामजी के 'मारवाड़ी महिलाओं ने बाजी मारी' के लेख से समाज की उन उन्नत महिलाओं की जानकारी प्राप्त हुई जिन्होंने आत्म निर्भरता का अद्वितीय परिचय दिया। नगर निगम चुनाव में श्रीमती सुनिता झंवर, श्रीमती मीना पुरोहित एवं सुश्री श्वेता इंदोरिया ने क्रमश: अपनी जीत हासिल कर समाज का गौरव बढ़ाया। भविष्य में पार्लियामेंट चुनाव के लिए भी अपनी जीत निश्चित करने हेतु प्रयासरत रहेगी ऐसी अपेक्षा है। लंदन में राजस्थानी फाउण्डेशन की स्थापना भी अपने आप में एक साहसिक कदम है।

- सत्यनारायण तुलस्यान, मु. बिहार

जून अंक में 'पारिवारिक सामाजिक समारोहों में सादगी बरतें' से मैं पूर्ण रूप से सहमत हूं। समाज विकास पत्रिका में प्रतिक्रिया और सुझाव इस संदर्भ में अनेकों बार प्रकाशित हो चुके हैं, किन्तु बड़े दु:ख की बात है कि समाज पर जूं नहीं रेंगती।

इस संदर्भ में जब तक कोई ठोस कदम सम्मेलन नहीं लेगा तब तक ये बीमारी समाज से दूर करना असंभव है। रोज नई-नई प्रथाएं शुरू की जा रही हैं। समाज में जागरुकता लाना जरूरी है।

- लक्ष्मीनारायण शाह
राउरकेला (उड़ीसा)

'समाज विकास' नियमित मिल रही है। अच्छी-अच्छी जानकारी से अवगत होता हूं। जून अंक में 'संस्कार' (प्रकाश चन्द्र जी अग्रवाल) बहुत ही अच्छी लगी। आज के परिवेश में अच्छे संस्कार का होना बहुत जरूरी है।

- योगेन्द्र प्रसाद प्राणसुखका
मधेपुरा, बिहार

'समाज विकास' पत्रिका का नियमित पाठक हूं। मुझे यह पत्रिका बहुत ही अच्छी लगती है, प्रत्येक माह इसके आने का इन्तजार रहता है। इसकी सामग्री विविधता से परिपूर्ण, रोचक, पठनीय, मननीय, सराहनीय तथा संग्रह करने के योग्य होती है। यह सामाजिक चेतना का अलख जगाती हुई नये समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करती है। सचमुच 'समाज विकास' पत्रिका समाज को नई रोशनी प्रदान कर रही है।

- युगल किशोर चौधरी
चनपटिया (बिहार)

जून ०५ अंक में मोहनलाल जी तुलस्यान का लेख 'पारिवारिक, सामाजिक समारोहों में सादगी बरतें' वाला मार्मिक आह्वान सामयिक है। प्रत्येक मारवाड़ी परिवार मुख्यत: धनाढ्य एवम् नव धनाढ्य वर्ग के छोटे-बड़े सभी सदस्यों को (विशेषत: युवा वर्ग) भी इस ज्वलंत विषय के वैचारिक तथा आचरण पक्ष पर गंभीरता से चिंतन करना समय की मांग है।

जैनाचार्य महाप्रज्ञजी ने समाज के धनाढ्य वर्ग को सतर्क करते हुए कहा 'समाज का यह विशिष्ट वर्ग अपने वैभव का जिस तरह भोंडा तथा अहंकारपूर्ण प्रदर्शन कर रहा है, आगामी ५-१० वर्षों में सामाजिक विस्फोट होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता और यही वर्ग इसका प्रथम शिकार होगा।' मारवाड़ी समाज का नेतृवर्ग और सामाजिक कार्यकर्ता बन्धु सर्वप्रथम इस फर्ज की लड़ाई में शहीद होने का साहसिक उदाहरण प्रस्तुत कर समाज को प्रत्यक्ष दिशादर्शन दें।

-विजय मोदी, अनगुल (उड़ीसा)

'समाज विकास' मई व जून ०५ अंक मिले। सम्पादकीय के अतिरिक्त मई अंक में 'समाज विकास' में सम्मेलनों की भूमिका डॉ. अहिल्या मिश्र, समाज सुधार बनाम पीढ़ियों की दूरियां- कपूर चंद पाटनी, जोरहाट, जून अंक में 'महिला एक विचारणीय प्रश्न' पुष्पा चोपड़ा, 'सामाजिक संगठनों के प्रति बढ़ती उदासीनता कारण और निवारण' - जयप्रकाश लड्ढा तथा रात १० बजे - 'संस्कार'- प्रकाश चन्द्र अग्रवाल बहुत अच्छे लगे। प्रत्येक अंक में १-२ विश्लेषणात्मक विशेष उल्लेखनीय लेख पढ़ने को मिल जाते हैं। पृ. २५ पर 'भोपाल राष्ट्र भाषा प्रचार समिति का एक अभिनव बौद्धिक अनुष्ठान' शीर्षक समाचार जून अंक में प्रकाशित कर मेरा उत्साह बढ़ाया है।

- घनश्याम गुप्ता, भोपाल

'समाज विकास' पत्रिका प्राय: हर महीने का पढ़ता हूं। बहुच अच्छी पत्रिका अपने समाज की है। लेख, कविता एवं समाचार का माध्यम भी है। मेरा विचार है कि इस पत्रिका को थोड़ी-मोटी की जाए अर्थात् पेज बढ़ाया जाए। लेख, कहानियां, अन्य सामग्रियां बढ़नी चाहिए। मूल्य बढ़ेगा तो कुछ विज्ञापन लिया जा सकता है।

- महावीर प्रसाद शर्मा, बनमंखी

'समाज विकास' जून अंक सामने है। 'सोने की चिड़िया' सकारात्मक सोच लिए हुए है। श्री सत्यनारायण सिंघानिया इस युग में भी संयुक्त परिवार को एक ईकाई के रूप में देखते हैं। हरि प्रसाद विजयरामका ने मारवाड़ी शब्द को शुद्ध और सांस्कृतिक बताया है।

- नागराज शर्मा, पिलानी

'समाज विकास' पत्रिका जून ०५ में अपने बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना का समाचार प्रकाशित किया है जिसके लिए समिति आभारी रहेगी। बड़ी ही खुशी की बात है कि

आगे कदम बढ़ाना

जीवन का उद्देश्य यही हो, आगे कदम बढ़ाना, चाहे जो बाधाएं आयें, हंसकर पार लगाना,
अंधकार में दीप जलाने, से घर रौशन होगा, ऊंच नीच कुछ भी हो जाएं, अपनों को मत ठुकराना।

हर पल ज्वार उठेगा दिल में, बंधन में मत बंधना, तुम प्रकृति की एक धरोहर, मौसम को समझाना,
आशाओं का दीप जलाकर, बैठा है हमराही, एक नयापन इस जीवन में, हरपल होगा लाना।

सोना तपकर ही खिलता है, पितल मत बन जाना, वासन्ती मौसम आयेगा, आगे कदम बढ़ाना,
भेद-भाव होते रहते हैं, भावुक मत बन जाना, बाहुबली कहलाना हो तो, हरदम प्रेम बढ़ाना।

समय देखता कहां सहादत, अपना हाथ बढ़ाना, एक सूत्र में बंधना होगा, कुछ करके दिखलाना,
समय ठोकरें देता आया, तुमको रोज संभलना, अनाधिकार कुछ भी मत करना, आपस में मिल रहना।

समदर्शी इतिहास रहा है, समता का सुख पाना, स्वप्न नये आएंगे तुझको, उसमें मत खो जाना,
बीते कल को कौन देखता, आगे बढ़ते जाना, अपना कोई नहीं जहां में, अपना जहां बनाना।

स्वार्थ सिद्धियां होती आई, कुछ भी कहना मुश्किल, सद्भावना से सुख मिलता, कीर्ति कर दिखलाना,
होनहार जो भी होता है, नतमस्तक रहता है, नासमझी में उलझ न जाना, जीवन सफल बनाना।

हीरे का क्या मोल लगाना, हृदय प्रफुल्लित रखना, चमक तुम्हारी जग में फैले, ऐसा कुछ कर जाना,
अदला-बदली की दुनिया में, सब कुछ बदल रहा है, आजादी का जश्न मनाने, सब मिल आगे आना।

'तुलस्यान' क्षणभंगुर तन है, एक दिन होगा जाना, क्यों उन्माद जगाए दिल में, हंसकर दिवस बिताना,
वक्त मचलता रहेगा हर दम तुम बिह्वल मत होना, जग तेरा सम्मान करेगा, कांटों को भी अपनाना।

आगे कदम बढ़ाना...

✍ **जगदीश प्रसाद तुलस्यान,** मुजफ्फरपुर

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा लंदन में राजस्थानी फाउण्डेशन की स्थापना दिनांक २२ मई २००५ को हुई। राजस्थानी फाउण्डेशन के पदाधिकारियों में सर्वश्री डा. कृष्ण कुमार सरावगी - अध्यक्ष, अशोक सेंचेती- उपाध्यक्ष एवं संजीव अग्रवाल को मंत्री बनाया गया है।

हमारे राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके अथक प्रयास से यह पुनित कार्य सम्पन्न हुआ। उन्हीं के प्रयास से राजस्थानी फाउन्डेशन की स्थापना विश्व भर में फैले मारवाड़ी समाज को एक सूत्र में बांधने एवं देश में सम्मेलन के माध्यम से समाज के साथ एक नवीन संबंध स्थापित करने की ओर एक मील का पत्थर साबित होगा। सचमुच में यह एक सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किया गया, जिससे सफलता की नई ऊंचाइयां सम्मेलन प्राप्त करेगा।

हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा लिखित पारिवारिक सामाजिक समारोह में सादगी बरतें एवं 'फर्ज की लड़ाई में दुश्मनों का होना ही लाजिमी है' बड़ा ही समाज के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा, अगर शत-प्रतिशत पालन किया जाय तो।

हमारे राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका द्वारा लिखित 'अनोखी परंपराएं' सचमुच में अनोखी है।

- प्रह्लाद राय शर्मा, सुलतानिया
बिहार मा.स. शिक्षा समिति, पटना

'समाज विकास' पत्रिका में सही विकास, मार्गदर्शक, उच्चकोटि की सोच हेतु सार्थक सिद्ध हो रही है। निवेदन है कि पत्रिका के उच्च स्तर को ध्यान में रखते हुए कागज व प्रिंटिंग में कवर का समावेश करने का विचार करे। जून २००५ के अंक में 'अनोखी परंपराएं' संस्कारों द्वारा ही स्वरूप समाज का निर्माण सम्भव'' तथा 'सोने की चिड़िया' स्तरीय व प्रशंसनीय रही।

- डा. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी
नैनीताल

'समाज विकास' जून २००५ अंक मिला। विभिन्न सामग्री बहुत ही उपयोगी एवं जानकारी देने वाली है। श्री भानीराम सुरेका का 'अनोखी परंपरा' आलेख बहुत सटीक लगा। मेरा परिचय इस अंक में दिया, आभारी हूं।

- बैजनाथ पंवार, चुरु
(राजस्थान)

इक्कीसवीं शताब्दी - कौन रोकेगा हमारे बढ़ते कदमों को

✍ नन्दकिशोर जालान

प्रकृति का शाश्वत नियम है- 'परिवर्तन'। एक सरसरे दृष्टिपात से स्पष्ट होता है कि वैदिक काल से अब तक जितने भी काल खण्ड आये हैं, उनमें हर एक की धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक मान्यताएं एवं नियम-कायदे एक-दूसरे से भिन्न रहे हैं। परिवर्तन 'सुधार' के नाम पर हुआ और उस सुधार ने समयानुकूल स्थिति के कारण 'विकृति' की मान्यता प्राप्त कर नये परिवर्तन को जन्म दिया।

बीसवीं शताब्दी में अपने आदिकालिक क्रांति रूप के वशीभूत अपने समाज ने परतंत्र भारत को स्वतंत्रता दिलाने में, विदेशियों से उद्योग-व्यापार के हस्तांतरण कर लेने में, सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं में आमूल-चूल परिवर्तन कर लेने में अपने जातिगत आधार पर अभूतपूर्व सफलता प्रदर्शित की जो इतिहास के कुछ पन्नों को सुशोभित करते हैं।

उद्योग-व्यापार के हो रहे फैलाव में सन् १९७० के आसपास से स्थानीय तौर पर नये आयामों द्वारा अन्य तरह का अवरोध प्रारम्भ हुआ। बैंक, बीमा, कोयला एवं कुछ अन्य खदानें, कुछ फैक्टरियों का, हवाई जहाज एवं अन्य अनेक सेवाएं आदि का राष्ट्रीयकरण किया गया तो दूसरी ओर 'मार्क्सवाद' की आवाज बुलन्द कर कल-कारखानों की कार्य-पद्धति में विभिन्न बाधाएं डालनी प्रारंभ हुई जिससे तेजी से हो रहे औद्योगीकरण की रफ्तार थम सी गई। दूसरी ओर पश्चिमी देशों की प्रगति अबाध चलती रही। चीन व रूस ने भी मार्क्सवाद को दरकिनार कर नव-निर्माण का पथ ग्रहण कर लिया। स्थितियों का विवेचन कर बदलाव लाने की बात भारत में सन् १९९१ के बाद धीमी रफ्तार से प्रारम्भ हुई जिसका प्रतिफलन अब पांच-सात वर्षों से उभरने लगा है और उसमें अपने समाज की हिस्सेदारी धीरे-धीरे प्रसारित होने लगी है।

लेकिन आज पृथ्वी के एक कोने से दूसरे किसी भी स्थान की दूरी कुछ घंटों की रह जाने अनेकानेक नये पहलू व रूपक उभरने लगे हैं।

इस दुनिया की आबादी लगभग ६ (छः) अरब आंकी गई है जिसमें भारत में १७ प्रतिशत व चीन में २३ प्रतिशत है जबकि भारत व चीन का जमीनी क्षेत्रफल २५ प्रतिशत से अधिक नहीं है। भविष्य में, जो बहुत दूर नहीं है, धीरे-धीरे लोगों का प्रत्यावर्तन होना अवश्यमभावी है, विशेषकर इसलिए भी कि उद्योग-व्यापार एवं विभिन्न सेवाओं के नए रूपक उन लोगों को अपनी ओर खींचेंगे जो आर्थिक रूप से प्रतिस्पर्धा में कमजोर हैं। आस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, कनाडा एवं अन्य कुछ ऐसे कम आबादी वाले देश हैं जहां अनियमित संभावनाए हैं।

यहीं यह प्रश्न उठता है कि २०वीं शताब्दी के मारवाड़ी युवक के परिप्रेक्ष्य में प्रारम्भ हुई २१वीं शताब्दी का युवक आगत समय में अपने किस कृतित्व का संकेत दे रहा है।

उद्योग-व्यापार की बात करें तो उसके दो पक्ष हैं- देश व विदेश। देश में इनसे संबंधित सरकारी नीति में पिछले दस वर्षों से आये बदलाव के कारण और विदेशी कम्पनियों के भारत के प्रति बढ़ते आकर्षण से उत्साहित अपने समाज के उद्योगी बन्धु नये कारखाने लगाने की ओर काफी सचेष्ट हुए हैं तो साथ ही साथ अर्द्धबन्द व बन्द कारखानों के अधिग्रहण की ओर भी आकर्षित हैं जिसका पश्चिम बंगाल का एक उदाहरण 'जैसोप एण्ड कम्पनी' का 'रूइया परिवार' के आधिपत्य में आना है। सीपीआई (एम) की नीति में बदलाव, दिखावटी अवरोधों के बावजूद, यहां के मुख्यमंत्री की इस ओर भरपूर प्रचेष्टा, सीपीआई (एम) पार्टी के मंत्री श्री अनिल विश्वास के इन शब्दों में- ''फैक्टरियां हवा में नहीं लगती'' से परिवर्तन का साफ संकेत देती है। मुख्यमंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य तो स्वयं विदेश जाकर (solum group) यहां सभी सुविधाएं देने को तैयार दिखते हैं। भारत की औद्योगिक व

'सर्विस सेक्टर' की नीति में सम्पूर्ण बदलाव एवं सहयोग के आश्वासन का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि निजी कम्पनियों की हवाई जहाज सर्विस रु. १/- व रु. ५००/- में भी टिकट देकर हवाई जहाज यात्रा के प्रति लोगों की दिलचस्पी बेहद बढ़ा रही है।

विदेशों की बात में आज का सर्वाधिक उदाहरण श्री लक्ष्मीनिवास मित्तल है जो पोलैण्ड से ब्राजील तक कई कारखानों का अधिग्रहण कर दुनिया के सर्वोत्तम 'स्टील प्रोड्यूसर' बन गये। यूरोप व अमेरिका में काफी रुग्ण कल कारखाने हैं तो साथ ही आस्ट्रेलिया, ब्राजील, अफ्रीका व कनाडा के विस्तारित क्षेत्रफल फैक्टरियां लगा सकने वालों की ओर आदर भरी दृष्टि से देख रहे हैं। जो आंकड़े आये हैं, उससे लगता है कि अपने समाज के लोग इस ओर कदम-दर-कदम बढ़ा रहे हैं।

दूसरी ओर भारत में विदेशी उद्योगपतियों और व्यापारियों को स्थापित करने या अपने अनेकानेक कार्य विशेष का 'आई.टी.' एवं अन्य 'सर्विसेज' (सेवाएं) को यहां से उपलब्ध करवाने एवं उत्पादित चीजों के अनेकानेक पार्ट्स वहां से बनवाकर मंगवाने की जो सुविधा उपलब्ध कराई गई उससे दुनिया में भारत की व्यापारिक साख में बहुत बड़ी वृद्धि हुई है। इसके कारण अमेरिका, यूरोप, जापान आदि देशों ने यहां के शेयर बाजार में काफी बड़ी रकम लगानी प्रारम्भ की है एवं इस देश के उद्योगपति भी अपनी कंपनी के शेयरों को विदेशों में फैलाकर नया रूपक खड़ा करने में समर्थ होते जा रहे हैं। जानकारों का कहना है कि चल रही स्थिति के कारण आगामी बीस वर्षों में भारत आर्थिक दृष्टि से समृद्ध देशों के बराबर आ जाएगा।

"Knowledge based Ability" की नई संज्ञा पिछले दस वर्षों का नया नारा है। भारत के नवयुवक व नवयुवतियां जिनमें अपना समाज भी प्रचुर मात्रा में है इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों में जाकर एम.बी.ए. या अन्य उच्चतम डिग्रियां प्राप्त करने में प्रचेष्ट हैं और उनकी नजर भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के प्रमुखतम पदों को सुशोभित करने पर लगी हुई हैं। इस प्रचेष्टा में वहां के बैंक भी बहुत ही कम ब्याज पर शिक्षा की पूरी फीस उपलब्ध करवा दे रहे हैं। जो सुविधा आज इस देश में नहीं है लेकिन होनी आवश्यक है।

अपने देश में जिस प्रकार का आपसी जाति-पाति का विभेद है वह वहां कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। चाहे जितने बड़े या छोटे पद पर हों या काम कर रहे हों उनकी कोई अलग जाति नहीं होती। इस दृष्टि से अपने देश में भी परिवर्तन प्रारम्भ हुआ है। ब्राह्मण, वैश्य, हरिजन, मीणा आदि अनेकानेक श्रेणियों में विभाजित व्यक्ति आज मात्र अपने उस आदिकालिक कार्यों में संलग्न नहीं रहकर विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर रहे हैं जिनमें व्यापार-उद्योग, उच्च सरकारी पद आदि-आदि हैं। मैंने ब्राह्मण को उद्योग चलाते व जवाहरातों का कार्य करते, नौकर को ब्राह्मण रूप में पूजा पाठ करते तथा आशीर्वाद देते, मीणा को हाईकोर्ट का जज व अन्य उच्चतम पदों पर आसीन, तथाकथित हरिजन को एक सुन्दर सी दुकान के मालिक के रूप में एवं अन्यों का भी तथाकथित जाति से अलग हट कर कार्यरत देखा है। देश में जातीगत विभाजन को कार्यपद्धति के आगत युग में मिट जाने के ये संकेत हैं जो देश की एकता को अधिक बलशाली करेंगे और धर्मान्तरण से छुटकारा दिलायेंगे। किसी समय 'आर्य समाज' उभर कर आया था जिसकी अभी भी कुछ-कुछ आवश्यकता प्रतीत होती है लेकिन अनिवार्यता नहीं।

वैदिक युग के अध्येता स्वीकारते हैं कि उस युग में नारियों का रूतवा पुरुषों से कम नहीं था एवं एक से एक विद्वता में बढ़-चढ़ कर थीं। लेकिन समय के हेर-फेर ने उसे पुरुष की दासत्वता में जकड़ दिया। बीसवीं सदी के अपने युवा समाज ने इस दासत्वता की बेड़ियों को तोड़-मरोड़कर फेंक दिया। आज के समाज का नारी वर्ग एक ओर सुशिक्षित व स्वतंत्र है तो दूसरी ओर धीरे-धीरे सभी क्षेत्र में अग्रसर हो रहा है। कोई ऐसी विधा नहीं है जहां वह परिलक्षित नहीं होती। एक शिक्षिका से लेकर स्वयं उद्योगों को चलाने वाली और हरियाणा की सुश्री चावला की तरह विज्ञान के हर चरण तक पहुंचने वाली अपने देश व समाज की स्त्रियों ने एक नए रूपक को जन्म दिया है। लेकिन समृद्ध विदेशों की स्त्रियों की तुलना में अभी भी काफी कदम आगे बढ़ने हैं। संतोष की बात है कि आवश्यक प्रगति दिनों दिन तीव्र होती जा रही है और समृद्ध देशों की बराबरी हासिल करने में अब बहुत समय नहीं लगेगा।

अपना समाज काफी अंशों में भविष्य द्रष्टा रहा है। इसकी पुष्टि सामान्यत: देश के इतिहास में है। इस समय भारत की जो आर्थिक, सर्विसेज सेक्टर, राजनैतिक एवं सामाजिक गतिविधियां सरकार एवं विभिन्न संस्थाओं की ओर से चल रही हैं उससे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिशा में तीव्र प्रगति के संकेत मिल रहे हैं और अपने समाज के पुन: हर क्षेत्र में तेजी से कदम-दर-कदम बढ़ाने का खुला आह्वान। दुनिया के हर देश में, हर कार्य में कुछ न कुछ वैचारिक बाधाएं रहती हैं और पहले भी रहती थीं, लेकिन अधिकतर बे-असर होती हैं। **अपने समाज के युवा वर्ग के सामने फिर से आह्वान खड़ा है और अपने जीवंत एवं क्रांतिकारी विचारों से वह इसका उपयोग करेगा इसमें संदेह नहीं।**•

चल रही शताब्दी में रण में समग्र समाज को ले जाना है

✍ मोहनलाल तुलस्यान

मारवाड़ी समाज का विस्तार आज सिर्फ भारत के कोने-कोने में ही नहीं वरन् पूरी दुनिया के कोने-कोने में है और जहां भी इस समाज के लोग हैं पूरी प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ हैं। एक समय सिर्फ व्यापार-वाणिज्य से जुड़ा होने का तमगा ही अब इस समाज के साथ नहीं रह गया है बल्कि आज यह समाज जीवन के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, वह भी पूरी शिद्दत से। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या संस्कृति का, सूचना-तकनीक का क्षेत्र हो या प्रशासनिक दक्षता का हर क्षेत्र में मारवाड़ी समाज के लोग हैं। यहां तक कि मीडिया का क्षेत्र भी इस समाज के लोगों के आधिपत्य में है। यहां मेरा मकसद मीडिया और मारवाड़ी समाज को लेकर चर्चा करना ही है।

भारत में मीडिया के जन्मकाल से ही मारवाड़ी समाज का इससे जुड़ाव रहा है। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में अर्थ की व्यवस्था करने से लेकर आज बड़े-बड़े पत्र समूहों के संपादन तक की भूमिका में यह समाज अग्रणी भूमिका में है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास देखें तो पता चलता है कि उस समय क्रांति की लौ को उद्दीप्त करने के लिए जितने भी पत्रों का प्रकाशन हुआ उसके प्रकाशन की व्यवस्था में किसी न किसी रूप में मारवाड़ी समाज के लोगों का हाथ था। उस समय इस समाज में शिक्षा का प्रचलन आज की तरह नहीं था पर अध्ययन को प्रोत्साहन देने में यह समाज सबसे आगे था। छोटे बड़े शिक्षण-संस्थानों की स्थापना से लेकर विद्वानों को अर्थ देकर शिक्षा के आलोक को बढ़ाने में इस समाज का अप्रतिम योगदान रहा। इस समय लेखकों, कवियों को भी इस समाज के लोगों ने संरक्षण देकर साहित्य के विकास की धारा को प्रवहमान रखा।

आज पत्र समूहों की तालिका देखें तो नवभारत टाइम्स, टाइम्स ऑफ इण्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दुस्तान, लोकमत, जनसत्ता, इंडियन एक्सप्रेस, नवभारत, राजस्थान पत्रिका, भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, विश्वमित्र, सन्मार्ग आदि सभी पत्र या पत्र समूहों का संचालन मारवाड़ी कर रहे हैं और इतनी कुशलता से कर रहे हैं कि राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय जगत में उनकी धाक है। भारत का प्राचीनतम हिन्दी दैनिक विश्वमित्र आज भी प्रकाशित हो रहा है। पर मेरी पीड़ा यह है कि इतने पत्र-पत्रिकाओं के होते हुए भी अपने समाज को लेकर किसी के मन में कोई चिंता नहीं है। कहीं मारवाड़ी समाज की दिशा और दशा को लेकर चर्चा नहीं होती।

एक समय कोलकाता से प्रकाशित दैनिक विश्वमित्र ने सामाजिक सुधार आन्दोलन को नेतृत्व दिया था। पत्र के सम्पादक बाबू मूलचंद जी अग्रवाल समाज का अग्निकुंड स्तंभ के अंतर्गत सामाजिक कुरीतियों, कुसंस्कारों, विकृतियों पर प्रहार करते हुए लेख लिखते थे जिसको लेकर चर्चा होती थी, आन्दोलन होते थे, दैनिक विश्वमित्र की होली जलाई जाती थी पर समाज का एक वर्ग इससे निर्भय होकर लड़ने की ऊर्जा भी प्राप्त करता था। आज मारवाड़ी समाज में सुधार का जो भी स्वरूप विद्यमान है उसमें विश्वमित्र की महती भूमिका रही है। लेकिन आज ये सब अतीत की बातें होकर रह गई हैं।

पिछले बीस-पच्चीस सालों में जिस नई विकृति का समाज में फैलाव हुआ है उसको लेकर किसी भी पत्र में आन्दोलन को प्रोत्साहित नहीं किया गया। इसका खामियाजा यह हुआ है कि समाज का अराजक वर्ग अपनी कुकृतियों पर शर्मिन्दा होने की जगह उत्साहित होता रहा और समाज की जड़ खोदता रहा। अगर मैं यह कहूं कि सामाजिक बुराइयों को पनपाने में समाज के लोगों द्वारा संचालित पत्र-पत्रिकाओं का भी हाथ रहा तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्या विडम्बना है कि बच्चे का जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ और अन्य पारिवारिक उत्सव भी अब घर की बजह होटलों, क्लबों आदि में मनाये जाने लगे हैं और उन पर लाखों रुपये पानी की तरह बहाये जा रहे हैं। सामाजिक कार्य के नाम पर जो लोग कन्नी काटते हैं, बाजार में मंदी का रोना रोते हैं वही लोग ऐसे उत्सवों पर जब रुपया लुटाते हैं तो उनकी मानवीयता, सामाजिकता बोध पर रोना आता है।

जब समाज अपनी सभ्यता और संस्कृति को भुलाकर रसातल में जा रहा हो तो शिक्षा, संस्कृति के मठाधीश होकर बैठे रहने का क्या फायदा ? हमें तो चाहिए कि समाज का जो भी व्यक्ति जिस क्षेत्र में भी हो आज आगे आए और समाज के हित में अपनी सोच से ऐसा उपाय बताए कि समाज की छवि सुन्दर हो, इसलिए -

चिन्तकों ! चिन्तन की तलवार गढ़ो रे, ऋषियों ! कृशानु उद्दीपन मंत्र पढ़ो रे
योगियों ! जगो, जीवन की ओर बढ़ो रे, बन्दूकों पर अपना आलोक मढ़ो रे
है जहां कहीं भी तेज हमें पाना है, रण में समग्र समाज को ले जाना है।●

स्पष्ट दिशा एवं दृष्टि : आज के युवा वर्ग की आवश्यकता

✍ सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

आज बड़ी चिन्तनीय स्थिति है। एक तरफ हम तेजी से आर्थिक प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं वहीं देश में सर्वत्र अराजकता, स्वेच्छाचारिता और अशान्ति है। हमारा समाज कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के चंगुल में जकड़ा हुआ है। घर-परिवार तरह-तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं। दुर्व्यसनों की बाढ़ आ गई है। उन्हें बढ़ावा देने वाले प्रचार और विज्ञापनों में दिन दूनी, रात चौगुनी वृद्धि हो रही है। न कोई प्रतिबंध है, न कोई रोक टोक।

युवा वर्ग एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां वह भटकाव की स्थिति में है। शिक्षा एवं ज्ञान में वृद्धि हुई है, लेकिन साथ ही सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट आई है। आज आवश्यकता है नई पीढ़ी में जागृति उत्पन्न करने की, विचारों के परिवर्तन की। उन्हें ऐसी दृष्टि देनी होगी, जो अच्छाई-बुराई को पहचान सके। सफलता प्राप्त करने एवं येन-केन-प्रकारेण धनोपार्जन की लालसा से प्रेरित युवा वर्ग को न तो अपने कर्त्तव्य का बोध रहा है, न ही उसके जीवन में अनुशासन है या चरित्र निर्माण का आत्मबल।

समाज के कर्णधार युवा पीढ़ी के जीवन निर्माण एवं चरित्र निर्माण के प्रति उदासीन हैं। आज हम मूक दर्शक बनकर वह सब कुछ देख रहे हैं, जो हमारी आंखों के सामने घटित हो रहा है। हमें अपनी भूमिका स्वयं ज्ञात नहीं है।

आज धन कमाने की अंधी होड़ सर्वत्र दिखाई देती है। अवैध तरीकों से धनवान बनने के प्रयास किये जाते हैं। सफलता मिलने पर समाज उन्हें ताज पहना देता है। आज का युवा भी इस दौड़ में शामिल होता नजर आ रहा है। झूठी शान दिखाने वाले सम्पन्न व्यक्ति स्वयं को समाज का गौरव और सर्वोच्च प्रतिष्ठा का अधिकारी मानकर गर्वित होते हैं।

आज के युवा वर्ग के लिए स्पष्ट दिशा एवं दृष्टि की आवश्यकता है। समता, सामाजिक, आर्थिक न्याय तथा मानवतावादी चिंतन की आवश्यकता है।●

१९८५ का चिंतन

इक्कीसवीं शती के प्रारंभ की ओर

✍ भंवरमल सिंघी, भूतपूर्व सभापति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म दिसम्बर, १९३५ में हुआ था। सम्मेलन के जीवन-काल के ५० वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस बीच सम्मेलन ने बहुत किया, बहुत पाया और बहुत कुछ नहीं भी पाया, पर हमको सभी प्रांतों के उन भाई और बहनों की आज याद आती है जिन्होंने सम्मेलन के प्रारम्भ से ही हर प्रकार से प्रयत्न कर के समाज की उन्नति में योग दिया। मेरा सम्मेलन के जन्म से एक वर्ष बाद ही सम्बन्ध हो गया था और पिछले ४८-४९ वर्षों से मैं बराबर सम्मेलन के माध्यम से मारवाड़ी समाज की सामाजिक, बौद्धिक और राजनैतिक क्षेत्रों में सेवा कर रहा हूँ। सम्मेलन के अनेक कार्यों, दौरों, अधिवेशनों और आन्दोलनों के अनेक संस्मरण आज भी मेरे सामने हैं। मैंने सारे भारतवर्ष में फैले हुए मारवाड़ी समाज का दर्शन किया है और पाया है कि इन ५० वर्षों में समाज का रूप और नक्शा बदल गया है। जहां एक दिन मारवाड़ी समाज केवल व्यापार, व्यवसाय और उद्योग-धंधों में ही लिप्त था, वहां आज उसके युवक और युवतियां सभी क्षेत्रों में दिखाई देते हैं, चाहे उच्च शिक्षा का क्षेत्र हो या बौद्धिकता या प्रशासकीय का। न्यायाधीशों, बैरिस्टरों, डाक्टरों, चार्टर्ड एकाउण्टेंटों, साहित्यसेवियों, पत्रकारों और कलाकारों की सचमुच समाज ने सर्वांगीण उन्नति की है, जिसका एक दिन सम्मेलन ने सपना लिया था। एक जमाना था जब मारवाड़ी के बारे में कहीं भी कोई आदमी कुछ बोल देता था, पर आज उसके बारे में कोई कुछ बोल नहीं सकता और बोलता है तो उसको जवाब भी सुनना पड़ता है। पिछले ५० वर्षों में समाज ने जो प्रगति की है, वह अभूतपूर्व है और उसका हम सबको गर्व है। खासतौर से हमारी महिलाओं ने पर्दा प्रथा को त्याग कर जो उन्नति की है और जिसका दर्शन गत वर्ष हमें पटना में हुए महिला मंच के अधिवेशनों में हुआ, उसका हम सबको विशेष आनन्द है। मेरा तो यह भी मानना है कि सन् २००० ई. तक पहुंचते-पहुंचते इस समाज का और भी भव्य रूप हो जाएगा। यह परिवर्तन और प्रगति लाने में जिन स्त्रियों और पुरुषों ने विभिन्न प्रांतों में समाज को नया दर्शन दिया है, नई प्रेरणा दी है, नया आन्दोलन किया है-- उनके प्रति आज हमारे शतशत नमस्कार हैं।

आज भी सम्मेलन ही सारे समाज की एकमात्र केन्द्रीय संस्था है। उसका रूप चाहे कितना ही छोटा हो पर उसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। वैसे उसके पास कुछ नहीं है, पर सारे समाज के पास हर दृष्टि से बहुत कुछ है, वह सम्मेलन का ही है। सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है और वह निरन्तर समाज को नये विचार और नयी प्रेरणाएं देता रहा है और देगा। समाज की ओर से हर समय वही बोलता है और बोलेगा।

इस दिशा में बहुत बड़ा उत्तरदायित्व हमारे युवकों और युवतियों पर है। युवा मंच का जो राष्ट्रीय अधिवेशन गोहाटी में हुआ है उससे बड़ी आशाएं हैं। मैं सब युवकों और युवतियों को नये समाज के निर्माण के लिए उनको अपनी ओर से विनम्र आह्वान करता हूं।

हमारा आज यह परम कर्त्तव्य है कि हम सारे समाज को अधिकाधिक संगठित, बलवान एवं प्रगतिशील बनायें।●

अनिवासी भारतीयों की नई पीढ़ी का भविष्य

✍ इन्द्र चंद संचेती, कलकत्ता

भारतीय उद्यमियों के मन में एक आशंका छिपी हुई थी कि वे विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से स्पर्द्धा नहीं कर सकते। कारण यह समझा गया कि विज्ञान का उनका ज्ञान अत्यंत उन्नत है, उनके पास विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय बाजार के साथ ही उद्योगों के लिए धन की कमी नहीं है। भारतीय उद्यमियों की नई पीढ़ी ने इसे एक कपोल कथा सिद्ध कर दिया है। इसने इन समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करना सीख लिया है। उन लोगों ने सिद्ध कर दिया है कि वे दुनिया के किसी भी भाग में घाटे में चल रही औद्योगिक इकाइयों को लागत प्रभावी पद्धति से मुनाफा कमाने वाली बना सकते हैं और धीरे दृढ़ता से लागत प्रभावी प्रबंधन के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बन रहा है। लागत प्रभावी 'परता' भारतीय उद्योगपतियों के पुराने युग का मंत्र था, जिसे वे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बड़े पैमाने पर कार्यान्वित नहीं कर सके, किन्तु भारतीय उद्योगपतियों की नई पीढ़ी ने 'परता' की इस भारतीय प्रणाली को अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रतिष्ठानों में लागू किया और निस्संदेह अपनी सफलता प्रमाणित की। मुझे भारतीय उद्योगपतियों की युवा पीढ़ी से मिलने और उनकी उपलब्धियों पर उनके साथ बातचीत के लिए इंग्लैंड और यूरोप के अन्य हिस्सों की एक महीने की यात्रा का अवसर मिला। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की विनिर्दिष्ट क्षेत्र में कतिपय भारतीय उद्योगपतियों की उपलब्धियों की जानकारी है। किन्तु हमें समझना चाहिए कि यह किसी व्यक्ति विशेष के प्रयास से उपलब्ध नहीं हो सकता है। यह भारतीय उद्यमियों की नई पीढ़ी की टीम की उपलब्धि है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ऐसे लक्ष्य की उपलब्धि के लिए उनके साथ मदद और सहयोग करते हैं।

२५ वर्ष पहले बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किसी क्षेत्र में प्रबंधित उद्योगों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने की बात सोचने में भारतीय उद्यमियों में हीन भावना आ जाती थी। वह गुजरे जमाने की बात थी। मैंने पाया है कि नये युग के भारतीय उद्योगपतियों और व्यावसायिक उद्यमियों में अद्यतन सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर की सहायता और भारतीय युवकों के ज्ञान के साथ लागत प्रभावी तरीके से किसी औद्योगिक उद्यम को चलाने की क्षमता सिद्ध करने और खुले तौर पर स्पर्द्धा करने में विश्वास की तेज धार है। मुझे इंग्लैंड में युवा उद्यमियों के साथ बातचीत का अवसर मिला और पाया कि वे मंगोलिया और चीन जैसे देशों में व्यापार और उद्योग लगाने की संभावनाओं की तलाश कर रहे हैं।

नये युग के उद्यमियों का जोश इतना ऊंचा है कि उन्हें विश्वास है कि वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाने की स्थिति में हैं। जहां भारतीय मूल के युवा उद्यमियों द्वारा व्यवसाय और उद्योग स्थापित किये गये हैं वहां वकीलों, डाक्टरों, अभियंताओं और प्रशासकों तथा साफ्टवेयर एवं आईटी प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञ जैसे पेशेवर व्यक्तियों के लिए भी द्वार खुलते हैं। मेरे विचार में आगामी दस वर्षों में सम्पूर्ण परिदृश्य बदल जाएगा। कुछ पेशेवरों ने चीन और एशिया के अन्य हिस्सों में उद्योग और व्यवसाय शुरू करने के लिए अनिवासी भारतीयों की मदद के लिए चीनी वकीलों को नियुक्त किया है। भविष्य सिर्फ उन लोगों के लिए ही उज्वल है जो कठोर श्रम करते हैं और उपलब्धि की दृष्टि है जो विश्वास से भरा हुआ और हीन भावना से रहित है।

हमें विश्व नागरिक और भारतवंशी (भारतीय मूल) के रूप में एक अंतर लाना है। हमें अंतर लाना है और सुनिश्चित करना है कि भारत और उसके युवा (नवयुग पीढ़ी) हमारे व्यवसायिक प्रयास से वह संभावना प्राप्त कर सकें और व्यवसाय शिक्षा के साथ ही योग्य संगठन और पहल से समर्थन दे सकें और आशा है कि इसकी जीत होगी और आगे सदी भारत की होगी। यह इतना सुनिश्चित है कि जितना प्रत्येक दिन सूरज का निकलना यदि संकल्प है और सफलता के संकल्प के साथ काम करने का विश्वास है। इसके लिए आवश्यक है लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारत के युवाओं को साथ मिलकर काम करने की। अनिवासी भारतीय के जोखिम की सफलता उत्पादों और सेवाओं के नवीकरण और सृजन की उनकी क्षमता पर निर्भर है और वह ग्राहकों द्वारा पसंद किया जाएगा। तब हीन भावना समाप्त हो जाएगी और आत्मविश्वास और संकल्प का पुनरोदय होगा। ऐसा अंतर्राष्ट्रीय अखाड़े और भूमंडलीय बाजार में तीन बड़ी घटनाओं के कारण हुआ है।

१. एक विश्व नेता के रूप में चमत्कारी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी का आविर्भाव। इसके पहले हम लोगों ने किसी भारतीय कंपनी को विदेशी बाजार और प्रतिस्पर्धियों से मुकाबला करते हुए नहीं देखा था और ऐसी सफलता मिली जिसका नाटकीय प्रभाव हुआ हमारे आत्मविश्वास पर और हम भूमंडलीय जोखिम लेने के लिए तैयार हो गए। हम सूचना प्रौद्योगिकी में सफल हुए और अभी भारत भूमंडलीय आउट सोर्सिंग का ४४% नियंत्रित करता है।

२. दूसरी घटना भारतीय मूल (मित्तल एवं अन्य) के व्यापारियों के व्यक्तिगत आदर्श प्रतिमानों की बड़ी संख्या विश्व मंच पर सामने आये। वे लोग या तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शीर्ष पर पहुंचे अथवा अग्रणी भूमंडलीय कंपनियां गठित कीं। विश्व की सर्वाधिक मूल्यवान उद्योगों का अधिग्रहण ही पर्याप्त नहीं है अपितु एक आत्मविश्वास उत्पन्न किया। सिर्फ अपने भीतर ही

नहीं, भारतीय मूल के अन्य व्यवसायियों और उद्यमियों के मन में भी और अंतर्राष्ट्रीय स्टील उद्योग (एक ऐंग्लो सेक्शन व्यवसाय शिक्षा द्वारा घटाये गये बोझ) में बड़े-बड़ों के एकाधिकार को चुनौती दी।

३. वर्ष २००४ के दौरान भारतीय उद्योगपतियों ने ६० विदेशी कंपनियों का अधिग्रहण किया और आशा है कि आगामी वर्षों में और भी एमएनसी का अधिग्रहण करेंगे। यह भारतीय मूल के विश्व के नये युग के युवकों के लिए गुंजाइश प्रदान करता है और युवा व प्रतिभाशाली भारतीय विश्व के एमएनसी के साथ प्रतिस्पर्धा का अवसर पा सकेंगे। फिर भी हम उन्नत आकांक्षाओं और प्रेरणा पर अपनी भावी सफलता को आधार नहीं बना सकते हैं हमें कुशल तलवारिया बनने की आवश्यकता है और सिर्फ छाती ठोकने वाले, झंडे लहराने वाले फुटबाल दर्शक नहीं बनना होगा। आत्मविश्वास और भरोसा के नये आविर्भाव का निवेश और अपना एमएनसी और अन्य बौद्धिक सृजित करने में उपयोग किया जाए। कल की भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनियां ऐसे बेजोड़ उत्पादों और सेवाओं के सृजन की योग्यता पर निर्भर और विकसित होंगी जो भूमंडलीय ग्राहकों को मोहित कर ले। यदि हम इस कार्य में सफल होते हैं तो हम लोग भूमंडलीय स्तर के नयी उद्यमिता का एक चक्र सृजित करेंगे। किन्तु यह निर्भर करेगा कि हम कितना गंभीर और वफादार हैं। वे लोग नये भारतीय प्रबंधित एमएनसी की सफलता का नया अध्याय लिखकर नई जिम्मेदारियां कार्यान्वित करने में ईमानदारी से भरोसा करते हैं और सौभाग्यवश प्रतीत होता है कि दुनिया विश्वास करती है (जैसी खबर है) कि यह एक ऐसी कथा है जिसका सुखद अंत होगा। हो-चिंग-सीईओ-टेनासेक होल्डिंग ने कहा कि दस वर्ष के बाजार उदारीकरण के बाद यह भारत की बारी है खलबली पैदा करने एक मोड़ देने वाले बिन्दू पर खड़ा होने का।

वास्तव में दुनिया भारत के बड़ी आर्थिक छलांग के बारे में उत्कंठित है। किन्तु अवधारण के साथ सिर्फ निष्पादन ही महत्वपूर्ण है।●

मारवाड़ी युवा समाज २०वीं और २१वीं शताब्दी के तराजू पर

✍ आत्माराम काजरिया, कोलकाता

जहां तक प्रश्न मारवाड़ी समाज के युवा वर्ग का है तथा २०वीं और २१वीं शताब्दी के तराजू पर तोलने का है, तो हम पाएंगे कि पलड़ा किसी ओर भी झुकने में समर्थ नहीं है। भारत की आजादी की लड़ाई में मारवाड़ी समाज की भूमिका भुलाई नहीं जा सकती। महात्मा गांधी के विदेशी शासन के विरुद्ध मुक्ति संग्राम में मारवाड़ी युवा वर्ग की भूमिका अहम रही है। २०वीं शताब्दी में देश को दी जाने वाली सेवाएं एक विषय पर अर्थात् देश की आजादी पर केन्द्रित थी। उस समय देश के मुक्ति संग्राम में भाग लिया। इतिहास साक्षी है कि विभिन्न देशों के सम्यक विकास में युवकों की प्रखर भूमिका रही है। समय की गति के साथ ताल से ताल मिलाकर युवा वर्ग जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में गतिशील होता है, तभी समाज को ऊंचाई प्राप्त होती है।

आजादी के बाद देश के विभिन्न क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज ने अपने युवाओं के बल-बूते पर अपना परचम लहराया है। राजनैतिक, सामाजिक, शिक्षा, प्रशासन, उद्योग, व्यवसाय, चिकित्सा और धार्मिक सभी क्षेत्रों में आज का मारवाड़ी समाज विशिष्ट महानुभावों की उपस्थिति से गौरवान्वित है और एक बड़े संतोष की बात है। परन्तु अभी हमें इतनी सी उपलब्धि से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। राजनीति में हमारे समाज की भागीदारी न्यून है। समाज को इस दिशा में आगे आने की विशेष जरूरत है। जिस गति से विश्व गतिशील है उसी गति से हमारे समाज को भी प्रगति पथ पर बढ़ना होगा -

समता नहीं ठहरे हुए राही के लिए,
जो भी आता है कतरा के गुजर जाएगा।
हम अगर वक्त के साथ-साथ चल न सके,
वक्त हम सबको ठुकरा के गुजर जाएगा।

आधुनिक विज्ञान के युग में, जहां इंटरनेट और सूचना क्रांति ने सारी दुनिया को एक उंगली के इशारे पर उपस्थित कर दिया है, वहीं समाज के युवकों को अधिक जागरुक और गतिशील होने की जरूरत है। भूमंडलीकरण के दौर में यदि हमारे समाज के युवक समय की नब्ज को पहचान कर आगे बढ़ेंगे, तभी सार्थक विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

वर्तमान अब २१वीं सदी में प्रवेश कर चुका है, हमारे समाज ने कई चुनौतियों को साहस के साथ स्वीकार कर लिया है। परन्तु अभी भी अनेक सामाजिक बुराइयां दूर करनी होंगी। इसके लिए युवा वर्ग को आगे आना होगा। आज का युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृतिक की ओर झुकने लगा है। नैतिक मूल्यों और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना में कमी आई है। शिक्षा के क्षेत्र में समाज ने काफी उन्नति की है। दहेज, आडम्बर, प्रदर्शन और विलासिता आदि सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन का दायित्व युवा वर्ग को साहस के साथ लेना होगा। समाज को अपने युवा वर्ग पर भरोसा है और युवा वर्ग सक्षम है कि अनैतिक और अमानुसिक दहेज, दिखावा, फिजूलखर्ची पर नियंत्रण कर सके। सामाजिक गति, प्रगति, विराम और विकास के ढांचे में समाज को आज के युवा वर्ग को ढालना होगा। वर्तमान सुखद और सुंदर है और भविष्य नि:संदेह उज्वल रहेगा। २०वीं और २१वीं शताब्दी के तराजू पर युवा वर्ग कितना खड़ा उतरेगा, यह तो समय ही बता सकेगा।

क्रांतदर्शी मारवाड़ी युवक के लिए -२१वीं सदी एक उज्ज्वल भविष्य

✍ सांवरमल भीमसरिया, संरक्षक - कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र-समाज विकास के सम्पादक श्री नन्दकिशोर जालान ने अपने सम्पादकीय लेख में २०वीं सदी में मारवाड़ी समाज के कृतित्व व स्वतंत्रता प्रेम, व्यापार व औद्योगिक क्षेत्रों में योगदान और सामाजिक सुधारों के परिप्रेक्ष्य में उसके क्रांतिकारी कदमों का युक्तिसंगत विश्लेषण किया है। वास्तव में इन सभी क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज ने २०वीं सदी में जो आयाम स्थापित किए हैं, वे भारत के इतिहास में गौरवपूर्ण हैं, तथा स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। २१वीं सदी में उसकी क्या भूमिका रहेगी? यह प्रश्न विचारणीय है। इस प्रश्न पर कुछ लिखने से पहले, एक भ्रांति का निवारण मैं आवश्यक समझता हूं। कुछ बुद्धिजीवी सज्जनों को 'मारवाड़ी' शब्द में कुछ निहित संकीर्णता दृष्टिगोचर हो रही है, वे मारवाड़ी शब्द के स्थान पर राजस्थानी शब्द का प्रयोग करने के पक्ष में हैं।

हजारों वर्ष पहले वर्तमान राजस्थान के विशाल विस्तृत उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में सरस्वती नदी बहती थी। इस सारे प्रदेश को तब सारस्वत प्रदेश कहा जाता था। भौगोलिक परिवर्तन के कारण सरस्वती नदी सूख गई उसका विनसन (लोप) हो गया, वह धरती के गर्भ में समा गई और वह समग्र सारस्वत प्रदेश मरुस्थल में परिवर्तित हो गया। किसी समय तीर्थ राज पुष्कर सरस्वती के तट पर बसा श्रेष्ठ तीर्थ था, वह तीर्थ तो अभी भी है किन्तु उसकी आत्मा सरस्वती वहां नहीं है। मरुधारा के भूमि पुत्रों को ही मरुवाड़ी या मारवाड़ी कहा गया है। पुराणों के अनुसार महाराज कृथु के बाद विशाल मरु प्रदेश में असंख्य राजा हुए। अनेक आर्य और अनार्य जातियां वहां आईं और स्थायी रूप से वहां बस गई। भारतीय इतिहास के अन्धकार युग में (८वीं से १२वीं सदी तक) वर्तमान जोधपुर समाज में सूर्यनगरी राजधानी के अधीन एक विशाल नव कोटी मारवाड़ नामक साम्राज्य होने की बात कही जाती है जो बाद में अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया जैसे- मारवाड़ (छोटे रूप में) मेवाड़, ढुण्ढाड़, हाड़ोती, काठड़, मगरा, बाढमेर, जैसलमेर, भटनेर इत्यादि। इनमें मारवाड़ राज्य की ऐतिहासिक गरिमामयी परम्परा ज्यों की त्यों बनी रही। किन्तु इन राज्यों की प्रजा अपने को मारवाड़ी नहीं कहती थी। वह ब्राह्मण, वैश्य, राजपूत, चारण, जाट, मीणा, गुजर आदि जातियों के नाम से जानी जाती थी। किन्तु जो यहां से भारत के अन्य प्रांतों में वाणिज्य-व्यवसाय आदि हेतु गये, उनको वहां उनकी मारवाड़ी भाषा के आधार पर मारवाड़ी कहा जाने लगा। कालान्तर में मारवाड़ी शब्द एक विशेष व्यवसायी वर्ग के लिए रुढ़ हो गया। वैसे इसमें राजस्थान की सभी जातियों के लोग शामिल हैं। मारवाड़ी एक गौरवशाली जाति है, क्योंकि इसके रक्त में शक्तिशाली वीर प्रसूता मरुधरा के रजकण बह रहे हैं। अन्य प्रदेशों के लोगों के मन में मारवाड़ी एक शोषणकर्ता के रूप में अंकित है। इसका कारण शोषण नहीं बल्कि इनके प्रति उनकी ईर्ष्या है, क्योंकि मारवाड़ी अर्जुन की तरह एकनिष्ठ होकर अपने व्यवसाय-वाणिज्य में लगनपूर्वक जुटा रहता है, अपने परिश्रम, बचत, विकास, कर्म निपुणता से धन कमाता है और उसका संचय करता है। प्रदेश के लोग धन अर्जित करने के उपायों को तो समझते नहीं बल्कि यह लांछन लगाते हैं कि मारवाड़ी ने हमारा शोषण कर धन संचय किया है। यह उनकी समझ की भूल है।

श्री राम मनोहर लोहिया ने कहा था, ''मैं मारवाड़ी परिवार में पैदा हुआ हूं और मारवाड़ियों को कभी सम्मान नहीं मिलेगा क्योंकि मारवाड़ी समाज अपनी प्रतिभाओं का सम्मान नहीं करता।'' इस कथन में सच्चाई है, अगर मारवाड़ी अपने सफल प्रतिभावान प्रबुद्ध व्यक्तियों का नियमित सम्मान करें, उनके चारित्र्य को प्रकाशित करें तो प्रदेश के अन्य लोग उनके मानवीय आदर्शों से परिचित होंगे, तब वे इनको शोषक नहीं कहेंगे।

मारवाड़ी समाज का हर युवक स्वभाव से क्रांतदर्शी होता है, जो अपनी सीमाओं, मर्यादाओं में रहकर वक्त की आवाज को अपने विचारों और आचरणों का मार्गदर्शक बनाता है। वह किसी असंगत रूढ़ी परम्परा, अन्धविश्वास, यथा चलित पूर्वाग्रह, संकीर्णता का दास नहीं होता। कोई अभाव, कोई रुकावट, कोई विवशता उसको आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती। २०वीं सदी ने परिवर्तन की आधारशीला रखी है, विगत १५ वर्षों में वक्त तेजी से बदला है, इस परिवर्तन से मारवाड़ी युवक भली-भांति परिचित है। वह जानता है कि २१वीं सदी में समाज, संस्कृति, शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग और चिंतन के तरीकों में आमूलचूल परिवर्तन होगा। वक्त ने आवाज बुलन्द की है कि राष्ट्र वैश्वीकरण की ओर आगे बढ़े। हर क्षेत्र में प्रतियोगिता का बोलबाला है। आर्थिक शक्ति और साधनों में नित्य नूतन यांत्रिकीकरण, तकनीकी परिवर्तन और अप्रत्याशित राजनैतिक व्यवस्था के कारण

अब बहुत सचेत, दूरदर्शी और संगठित होना अनिवार्य हो गया है। कम्प्युटरीकरण के इस युग में उच्च तकनीकी शिक्षा और ज्ञान, गुणवत्ता, औद्योगिक प्रशिक्षण सफल कैरियर के लिए आवश्यक है। परिवर्तन की गति के अनुसार मरवाड़ी युवकों को भी गतिवान बनना होगा। इस कार्य में संरक्षकों के साथ संगठन को भी सहयोग करना होगा। वक्त की मांग को जितना संगठन समझ सकता है, उतना अभिभावक नहीं। अत: संगठन को रचनात्मक क्षेत्रों में सक्रिय होना होगा। वैश्वीकरण की आंधी से अपनी जातीय पहचान की रक्षा के लिए सार्थक प्रयत्न करने होंगे। व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की सीमा निश्चित कर, अस्थिरता के रोग से ग्रस्त राजनैतिक व्यवस्था पर दबाव बनाने के लिए मारवाड़ी वोट बैंक को शक्तिशाली बनाना होगा। मैं समझता हूं कि २१वीं शताब्दी में संगठित मारवाड़ी युवक का भविष्य ही उज्वल है, क्योंकि वक्त के अनुकूल बदलने की उनमें असीम क्षमता है।

संकट के समय देश के लिए सबसे बड़ा त्याग करने की भावना मारवाड़ी युवक के रक्त में युगों-युगों से बह रही है। भविष्य में भी वह ऐतिहासिक भामाशाह से दो कदम आगे ही रहेगा। २१वीं सदी में धन की प्रभुता अपेक्षाकृत अधिक होगी। धन कमाने के तरीके जितने मारवाड़ी युवक जानता है, उतने अन्य समाजों के युवक नहीं जानते। मारवाड़ी लक्ष्मी पुत्र है, लक्ष्मी का उपासक है, विकट परिस्थिति में भी वह भीख नहीं मांगेगा। सैकड़ों हाथों से कमाकर हजारों हाथों से दान करेगा।

२१वीं सदी मीडिया सर्वाधिक शक्तिशाली होगा। मीडिया पर मारवाड़ी समाज का नियंत्रण पहले से भी अधिक होगा। वैज्ञानिक पत्रकारिता के क्षेत्र में मारवाड़ी युवकों का प्रवेश तीव्र गति से हो रहा है। उद्योगों का भविष्य वैश्वीकरण से जुड़ रहा है, मारवाड़ी वैश्वीकरण की नीति के सर्वाधिक पक्ष में है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां उनके सहयोग के बिना भारत में सफल नहीं हो सकती। स्वाधीनता के समय प्राय: सभी अंग्रेजी कंपनियां जिस प्रकार मारवाड़ियों के हाथों में आई वैसे ही समय आने पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना सर्वस्व, दायत्व इन्हीं हाथों में सौंप देगी क्योंकि उद्योग, वाणिज्य, पूंजी संचय में मारवाड़ी दिमाग विकसित राष्ट्रों की व्यावसायिक संस्थाओं पर हावी है।

संगठन में मेरा निवेदन है कि वह केवल अतीत की मान्यताओं, आदर्शों और उपलब्धियों पर मुग्ध होकर, उसके गीत न गायें। हमारी वर्तमान समस्याओं के समाधान में वे बहुत सहायक नहीं हैं। व्यक्ति स्वातंत्र्य के तूफान से परिवारों की सुख शांति सुरक्षित नहीं है, उनको तनाव मुक्त करने की दिशा में विचार पूर्वक कदम उठाए जाने चाहिए। सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक सभी समस्याओं का समाधान युग सापेक्ष दृष्टिकोण रखते हुए खोजना चाहिए।

अंत में मैं यह लिखना चाहता हूं कि घटनाएं घटने से पहले अपनी परछाईं फेंकती है, आने वाला वक्त अपनी झांकी दिखाने लगा है। दिवारों पर वक्त की आवाज लिखी जा रही है, धर्मग्रंथों की नहीं। उसे पढ़कर ही युवक को आगे बढ़ना होगा, मंजिल तक पहुंचने के लिए यह जरूरी है। ''बढ़ चलो मित्रों वक्त की आवाज पर, घबराओं नहीं वह तुम्हें तुम्हारे असली मुकाम पर पहुंचा देगी।'' संगठन को चाहिए कि वह परिवर्तन का स्वागत करे, अपने सामाजिक मूल्यों और आदर्शों को युग सापेक्ष बनाने में शनै:-शनै: कदम उठाए। वैयक्तिक इच्छाओं का दमन न करें। नूतन और पुरातन विचारों परम्पराओं, संस्थाओं में संतुलन बनाने का प्रयास करें। परिवर्तन की गति व उपलब्धि का मूल्यांकन समय-समय पर अवश्य करे। याद रहे, परिवर्तन ही धर्म है, वह सदैव अच्छे के लिए होता है। यथास्थिति बनाए रखने का मोह छोड़ दें। भौतिकवाद के भूत से भयभीत न हों, वह एक सीमा के बाद आध्यात्मिक मानववाद में स्वत: परिवर्तित होगा, यही इसकी नियती है।

शानदार था भूत, भविष्य भी महान है।
गर सम्भालो वक्त को जो वर्तमान है।।●

चाल मत चाल सूं बारै

- लक्ष्मणदान कविया

फैल मत हाल सूं बारै।।
चाल मत चाल सूं बारै।।
मामूली होवियां पूंजी।
निकल मत खाल सूं बारै।।१।।
टोटो घण भुगतियौ पैला।
जाव मत काल सूं बारै।।२।।
ऊंची अर बात अणतोली।
काढ मत गाल सूं बारै।।३।।
चारौ भर लाग सूं बीरा।
ढोल मत झाल सूं बारै।।४।।
ओठां सूं बात सह बणसी।
होव मत ताल सूं बारै।।५।।
धुरी सूं स्याळ कद आवै।
नाहर दकाल सूं बारै।।६।।
धान री पैठ फसलां में।
हुवै नीं फाल सूं बारै।।७।।

इक्कीसवीं सदी को नोच रहा है नंगापन

समृद्धि के संस्कृतिविहीन होने का यह स्वाभाविक परिणाम है

✍ जुगलकिशोर जैथलिया

अभी कुछ दिन पूर्व ही समाचार पत्रों में यह समाचार पढ़कर मन को बहुत आघात लगा कि मारवाड़ी समाज के संपन्न घरानों के कुछ युवकों ने कोलकाता के सॉल्टलेक क्षेत्र में अपनी कार में बैठे-बैठे एक तरुण अभिनेत्री के साथ अश्लील हरकतें की, पुलिस के हस्तक्षेप से ही अभिनेत्री को राहत मिली, युवक थाने में जाकर जमानत पर छूटे। उस क्षेत्र में पहले भी ऐसी घटनायें घटित हो चुकी थीं। सभी युवक ऊंची कक्षाओं के विद्यार्थी थे, उनके परिवार भी इज्जतदार थे।

हमारा समाज ऐसा तो नहीं था पहले। कैसे इक्कीसवीं सदी में यह परिवर्तन तेजी से आ रहा है। डॉ. धर्मवीर भारती ने एक समय 'अंधा युग' की चर्चा की थी, लगता है आज तो सरासर 'नंगा युग' का दौर है। टीवी और अश्लील सामग्री से युक्त फिल्मों का तो इसमें बहुत बड़ा योगदान है ही, आर्थिक संपन्नता की अंधाधुंध दौड़, दिखावे एवं प्रचार की होड़ तथा पूर्णतः स्वकेन्द्रित भोगभरी जीवन पद्धति का भी इसमें कम योगदान नहीं है। पहले संयुक्त परिवारों के कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी हर व्यक्ति को कुछ न्यूनतम आचरण पालन करने ही पड़ते थे। उसकी परिधि को लांघकर कोई सहज ही बाहर जा नहीं सकता था, परंतु अब संयुक्त परिवार तो अपनी सत्ता खो ही चुके हैं, छोटे परिवार का मुखिया या पिता भी आज अपनी संतानों के आचरण को नियंत्रित करने में अपने को असहाय पाता है। बच्चे अब आचार-विचार, खान-पान सबमें परम स्वतंत्र हैं, उन्हें रोकने, टोकने की बात अब लगभग बीते युग की सी हो गई है। सहनशीलता क्रमशः नीचे की सीमायें छूती जा रही हैं। युवकों में प्रेम-विवाह एवं तलाक (छोटी-छोटी बातों पर) बढ़ते जा रहे हैं। मां-बाप दोनों के ही अर्थोपार्जन में लिप्त रहने के कारण बच्चे उपेक्षित एवं परिवार के संस्कार से अपरिचित रहने को मजबूर हैं। 'डिब्बे का दूध और सरकारी शिक्षा' से ही उनका जीवन पलता-बढ़ता है, यही सच्चाई है।

अतः आध्यात्म विहीन, धर्म निरपेक्ष एवं भोग तथा स्वार्थ सापेक्ष वातावरण में हमारी पीढ़ी पल बढ़ रही है। सिनेमा एवं टीवी के पर्दों पर आने वाले अभिनेता-अभिनेत्रियां ही इनके आदर्शपुरुष हैं। पर्दे पर दिखाये जा रहे उनके क्रियाकलाप ही इनके प्रेरक बन जाते हैं और ये कर बैठते हैं नादान हरकतें जो पूरे परिवार भी नहीं, पूरे समाज की प्रतिष्ठा पर कालिख पोत देती है।

इससे छुटकारा पाना बहुत सहज नहीं है क्योंकि इस भोगवाद या अश्लीलता का भी एक मजबूत अर्थ-शास्त्र है जिसे बड़े पाश्चात्य देशों का प्रभावी समर्थन है जिन्होंने 'ग्लोबलाइजेशन' के नाम पर मानवदेह को उपभोक्ता वस्तु बनाकर बाजार में खुला छोड़ दिया है। 'सेक्स' उसी अर्थ-शास्त्र या बाजार का प्रभावी एवं स्वाभाविक हिस्सा है। अब तो खुलेपन के नामपर इसमें प्रबल प्रतिस्पर्धा जारी है, ज्यादा से ज्यादा नंगा कैसे हुआ जाए इसकी खोज जारी है। भारतीय चिंतन में मानव देह ब्रह्म से मिलने का मानी जाती थी। आज यह शुद्ध उपयोग की वस्तु बनकर रह गई है। अर्थ ही आज का भगवान बन गया है।

आजादी के बाद भारत में कुछेक भ्रष्ट राजनेता, भ्रष्ट सरकारी अफसर एवं भ्रष्ट व्यवसायियों की तिकड़ी के पास अकूत धन इकट्ठा हो गया है। इनकी दृष्टि में पश्चिम ही प्रज्ञावान है। वहीं का सब कुछ अनुकरणीय है, नंगापन भी। वहां का रहन-सहन, खान-पान, भाषा, सोंच एवं व्यवहार ही आदर्श सभ्यता है। भारत की सभ्यता, परंपरा, संस्कृति, मर्यादा एवं सोच को वे जड़तापूर्ण एवं दकियानूसी करार देते हैं। यही सोच आज हमारे युवकों को भटका रही है। इस कारण वे आज ऐसा कुछ भी करने में संकोच नहीं करते जिसे हमारी पुरानी पीढ़ी के लोग करना सोच भी नहीं सकते थे। वस्तुतः हमारी नई पीढ़ी एवं बिगड़ैल समर्थों की सोच अब 'लोकल' से 'ग्लोबल' जो हो गई है। हमारे समूचे आचरणों का गिरावट इसी सोच का स्वाभाविक परिणाम है। जैसी जिसकी दृष्टि, वैसी ही उसकी सृष्टि। समृद्धि जब संस्कृति विहीन होगी तो उसका स्वाभाविक परिणाम यही होगा, अन्य कुछ नहीं।

प्रश्न यह है कि क्या हम भी इसके सामने घुटने टेक दें? नहीं, यह नहीं हो सकता। हमने इतिहास में अनेक राक्षसी संस्कृतियों के नंगे नाच का सामना किया है और उन्हें पराजित कर दैवी संस्कृति की पुनर्स्थापना की है। मारवाड़ी समाज तो संयम एवं सदाचार की बानगी बनकर रहा है। इसे अपने 'स्व' को फिर से पहचानना होगा, जगाना होगा एवं थोड़े से स्वच्छन्दतावादी लोगों के विरूद्ध खड़ा होना होगा जो सारे समाज की गलत तस्वीर पेश कर रहे हैं। हमने आजादी के संघर्ष के दौर में यह करके दिखाया था, उसकी स्मृति से प्रेरणा लेकर आज भी अपने घर को ठीक कर सकते हैं, अन्यों के लिए प्रेरणा भी बन सकते हैं। यह तभी होगा जब प्रौढ़ एवं बुजुर्ग पीढ़ी अपने को 'असहाय' समझने की सोच से मुक्त कर बुराइयों के विरूद्ध डँट जाए। हमारे समाज में प्रेरक सत्पुरुषों का आज भी अभाव नहीं है, आवश्यकता है हमें कुछेक बिगड़ैल स्वच्छन्दतावादियों के साथ रहने की अपनी मजबूरी को अपने कंधों से झटकने की। यह हम कर सकते हैं, करके दिखायें।●

इक्कीसवीं शताब्दी में मारवाड़ी समाज का लक्ष्य

✍ दुर्गा प्रसाद नाथानी

बीसवीं शताब्दी अभी ५ साल पहले खत्म हुई है और इस शताब्दी में मारवाड़ी समाज का विशेष योगदान रहा। जो समाज पहले एक दुकानदार के रूप में जाना जाता था उसने शिक्षा में अभूतपूर्व प्रगति की। मारवाड़ी युवकों ने सभी प्रकार के विषयों में प्रवेश किया। डॉक्टर बने, चार्टर्ड एकाउन्टेंट बने, वकील बने, जज बने, राजनीति में भी बढ़चढ़कर भाग लिया। दुकानदार से बढ़कर व्यवसायी और उद्योगपति बने। सरकारी महकमों में ऊंचे-ऊंचे ओहदों पर पहुंचने में मारवाड़ी समाज के बंधुओं ने सफलता पाई और विमल जालान रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के सफल गवर्नर हुए।

स्त्री शिक्षा के मामले में भी समाज ने काफी प्रगति की और महिलाओं ने भी सभी क्षेत्रों में प्रवेश किया। मारवाड़ी समाज आज प्राय: दुनिया के हर देश में पहुंचा है और अपना सिक्का वहां बनाया है। लक्ष्मी नारायण मित्तल दुनिया में सबसे बड़े स्टील के उद्योगपति के रूप में ब्रिटेन में सबसे बड़े धनी व्यक्ति माने जाते हैं। वहां की संसद के उच्च सदन में उन्हें सदस्य बनाया गया। पहले मारवाड़ी सारे देश में फैला था अब तो विदेश में भी अपना डंका बजाया है। राजस्थान के लोगों ने अनेक विधाओं में प्रगति की है और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। विदेशों में मारवाड़ी व्यापारियों ने ही नहीं डॉक्टरों और इंजीनियरों, चार्टर्ड एकाउन्टेंट और कम्प्यूटर जानकारों के रूप में भी बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। मारवाड़ी जहां-जहां गया है वहां स्थानीय लोगों से मिलजुल कर रहता है और अपने आचार-व्यवहार के माध्यम से भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार का काम कर रहा है।

ऐसी आशा है कि आने वाली दशाब्दियों में मारवाड़ी समाज के युवकों और युवतियों का नाम देश एवं विदेश में सभी क्षेत्रों में आदर के साथ लिया जायेगा। इतनी प्रगति वाले समाज में भी दहेज और दिखावा अभी खत्म नहीं हुआ है, कम भी नहीं हुआ है बल्कि पहले से भी उग्र रूप ले चुका हे। पढ़े-लिखे युवकों को और उनके शिक्षित माता-पिता को भी दहेज और दिखावे से कोई परहेज नहीं है। यह एक चिन्ता का विषय है। सम्मेलन को इस बारे में सोचना पड़ेगा कि इस बारे में उसके अभी तक के प्रयास क्यों विफल रहे। कोई समुचित योजना बनाकर इसके बारे में फिर से समाज में जागृति लाने की चेष्टा करना अत्यन्त आवश्यक है।

महिलाओं ने शिक्षा क्षेत्र में प्रगति कर अपनी कुशलता और बुद्धिमता का परिचय दिया है। अनेक विधाओं में उनकी भागीदारी भी बढ़ी है। परंतु उनकी स्वतंत्र, आर्थिक पहचान अभी कम ही बन पाई है। आशा है इस बारे में महिलायें आर्थिक स्वतंत्रता में और आगे बढ़ेंगी।

बच्चों में अंग्रेजी शिक्षा और लगातार दूरदर्शन के प्रभाव से पाश्चात्य सभ्यता काफी घर कर गई है। बोल-चाल, रहन-सहन, खान-पान सभी में विशेष करके शहरों में प्रगति के नाम पर विकृति ने ही अपनी पैठ बनाई है। सम्मेलन के माध्यम से समाज को इस विषय में गहन चिंतन की आवश्यकता है। समाज का एक वर्ग संपन्नता के नाम पर बाकी समाज से कटकर अलग खड़ा दिखाई दे रहा है। संपन्न परिवारों में बाकी लोगों के प्रति संवेदनशीलता कम हुई है और उनकी एक अलग परिधि बनती जा रही है जो भविष्य के लिये ठीक नहीं है। सारे समाज के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य और भोजन-पानी की न्यूनतम व्यवस्था संपन्न लोगों का कर्तव्य और दायित्व है। यह भावना फिर से प्रबल होनी चाहिये।

आने वाले समय में मारवाड़ी समाज के युवकों और युवतियों को कमाने के साथ-साथ खर्चे की व्यवस्था को भी सारे समाज के लिये गुणात्मक और गुणकारी बनाना चाहिए।●

अनन्त का पथ

– श्रीमती इन्दु चाण्डक

अनन्त का पथ
विहिन पथ
दृष्टि से ओझल किन्तु
पास है गन्तव्य
आस्था विश्वास लेकर
चल पड़े हैं पथिक जितने
बन गईं उतनी ही राहें
और डगर
गतिशील हैं सब किन्तु
कोई अंश उसका
परमाणु-सा विस्फोट कर
जब प्राप्त कर लेता है ऊर्जा
होता नहीं है मंदा तब
प्रकाश उस दीप का
मिल जाती हैं रश्मियां भी
सूर्य को फिर से दिखाने को मूक
शांति के प्रदेश का
मानवता और प्रेम का
विश्व के बन्धुत्व का।

सामाजिक एकता व राजनीति

- श्रीमती बिमला डोकानियां
उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

मारवाड़ी समाज भारतवर्ष के कोने-कोने में ही नहीं पूरे विश्व में फैला हुआ है। इनका अवदान अपने देश के प्रति बहुमूल्य रहा है। इस समाज ने छोटे-बड़े उद्योगपति, डॉक्टर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. आदि कई प्रतिभाशाली शक्तियों को जन्म दिया है। वहीं स्वतंत्रता आंदोलन में तन-मन-धन अर्पित करने वाले देशभक्त भी। भारत-भूमि और निजाम इस्टेट की स्वतंत्रता आंदोलन में इस समाज के महान नेताओं ने जेल-यात्राएं भी की और असह्य यातनाओं को भुगतने से ये पीछे कभी भी नहीं हटे। उदारता एवं परोपकारिता का संवाहक यह समाज जिस भी प्रांत में बसा वहीं का होकर रह गया और सेवा भावी संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों, धर्मशालाओं, अस्पतालों का निर्माण कर जरूरतमंद एवं असहाय व्यक्यिों की सेवा की।

नेतागण उनके गुणगान में क्या-क्या नहीं करते हैं तथा उनके सुख-दु:ख में उनके हमदर्द बनकर उनके पीठ पर अपने हाथ फेरते नहीं थकते। इसका मुख्य कारण है उनके विधायक एवं सांसद, विधान सभा और लोकसभा में उनके विकास और मांगों के समर्थन में आवाज उठाते रहते हैं जबकि हमारे समाज से राजनीति के क्षेत्र में इतने कम व्यक्ति हैं कि उन्हें अंगुलियों पर गिना जा सकता है। और जो हैं वह भी समाज के लिये आवाज उठाने की जरूरत नहीं समझते हैं। हमारे समाज की एक और खामी है और वह है एकता की कमी। हमारा मारवाड़ी समाज अग्रवाल, जैन, माहेश्वरी व ब्राह्मण इन भागों में बंटा हुआ है। अत: चारों समाज में किसी भी समुदाय की प्रतिकूल परिस्थिति में एकता का प्रदर्शन करते हुए पूरे राजस्थान व मारवाड़ी समाज को संगठित होकर उसका सामना करना चाहिए। राजनीति में अपने प्रतिनिधि की संख्या गरिष्ठता भी होनी अत्यन्त प्रयोजनीय है।

आज देश के अंदर राजनैतिक उथल-पुथल का वातावरण है। इससे लाभ उठाकर बहुत से देशद्रोही पैसे के लिये देश को बेच रहे हैं। और विदेशियों के इशारे पर देश में गड़बड़ी फैला रहे हैं। परंतु धन्य है यह समाज जो अपनी सर्वस्व इस देश पर गर्व का विषय है कि आज तक इस समाज के किसी भी व्यक्ति का नाम गद्दारों की गिनती में न देखा गया न सुना गया। इस समाज को तो वैसे ही लक्ष्मी पुत्र कहलाने का वरदान है अत: इन्हें यह कलंकित कार्य करने की आवश्यकता भी नहीं है। संगठन पर बल देना चाहिये। कार्य को संपादित करने के लिये समाज के नेताओं, कार्यकर्ताओं, नवयुवकों बहनों को दहेज प्रथा का पूर्णत: समापन अखंड सामाजिक एकता की रक्षा आदि का संकल्प लेकर आगे आना होगा एवं गांवों में शहरों में सेमिनार व सभाओं के द्वारा समाज के लोगों को जागृत करना होगा, आंदोलित करना होगा।

२१वीं सदी में मारवाड़ी समाज

- लोकनाथ डोकानियां
अध्यक्ष, प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

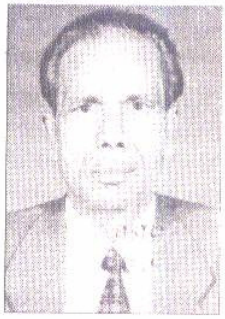

मारवाड़ी समाज देश का महत्वपूर्ण समाज है। जनसंख्या के हिसाब से हमारी आबादी देश की संपूर्ण आबादी का दसवां हिस्सा है। हमारा समाज देश के कोने-कोने में फैला हुआ है तथा अपने परिश्रम, ईमानदारी, मिलनसारिता, दानशीलता, कर्त्तव्य परायणता, देश भक्ति एवं समस्त मानवता की सेवा भावना के कारण पहचान बना चुका है।

हमारा अतीत गौरवशाली रहा है तथा भारत की आजादी के संघर्ष में भी हमारी भूमिका प्रभावशाली रही है। बिड़ला जी पूज्य बापू की आर्थिक शक्ति थे तथा जमुनालाल बजाज उनके पंचम पुत्र कलाये। नैतिक मूल्यों का संवर्धन तथा राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण की भावना हमारी उज्जवल विरासत रही है जिस पर हमें गर्व है। ''खाता न बही मारवाड़ी बोले सो सही'' जैसी उक्ति हमारी उच्च कोटि की ईमानदारी को अभिव्यक्त करती थी।

वर्तमान समय में जब हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं, हमारे समाज ने नई चुनौतियों को साहस के साथ स्वीकार किया है। दहेज के खिलाफ वैवाहिक परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह पद्धति ने शानदार भूमिका निभाई है। तथा अनेक जोड़ों के जीवन में नई आशाओं का संचार किया है।

हमारे समाज ने जहां शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग, चिकित्सा, न्याय, टेक्नोलॉजी, साहित्य, महिला सबलता एवं प्रशासनिक सेवा इत्यादि क्षेत्रों में प्रगति की है वहीं राजनीति में हमारी भागीदारी काफी न्यून है। लोकसभा में हमारे केवल कुछ ही सांसद हैं, जिससे राजनीति के प्रति हमारी उदासीनता जाहिर है। राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करवाने के लिये भी हमें पूरी तन्मयता से लगना है क्योंकि राष्ट्रभाषा हिन्दी के बाद यह सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। इसकी उन्नति राष्ट्र की भावनात्मक एकता को मजबूती प्रदान करेगी। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, प. बंग मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला सम्मेलन तथायुवा मंच मिलकर समाज के सर्वांगीण विकास के लिये भागीरथ प्रयास कर रहे हैं और समाज में नई चेतना का संचार हो रहा है। हमारा अतीत गरिमा मंडित हो रहा है, वर्तमान सुंदर है और भविष्य नि:संदेह उज्जवल होगा।

२०वीं शताब्दी की समाज की क्रांतिकारी व विशिष्टतम संस्कृति को क्यों विस्मृत कर रहे हैं

✍ राम निवास लखोटिया, अध्यक्ष, राजस्थानी अकादमी

यह निर्विवाद है कि मारवाड़ी समाज का अतीत और विशेषकर क्रांतिदर्शी मारवाड़ी युवकों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान बहुत ही प्रेरक रहा है। उदाहरणार्थ, श्री घनश्याम दास बिड़ला, श्री जमुना लाल बजाज, सेठ गोविन्द दास मालपाणी एवं श्री कृष्ण दास जाजू जैसे अनेकों नाम स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने वाले मारवाड़ी व्यक्तियों के लिए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त राजनीति, व्यापार, व्यवसाय और शिक्षा के क्षेत्र में भी मारवाड़ी युवकों ने अपना स्थान सुरक्षित किया है। लेकिन पिछले कुछ सालों में मारवाड़ी समाज का ह्रास दिखाई दे रहा है और यह चिन्ता का विषय है। इस लेख में मैंने कुछ ऐसे मुद्दों एवं उपायों पर प्रकाश डाला है जिससे मारवाड़ी संस्कृति को हम इस शताब्दी में बचा सकते हैं।

मारवाड़ी संस्कृति के प्रमुख आयाम

यह सर्वविदित है कि मारवाड़ी समाज की और विशेषकर हमारे युवा वर्ग और अन्य वर्गों की भी यह एक पहचान रही है कि हम जो कहते हैं उसे निभाते हैं अर्थात् वचनबद्धता में हमारा सानी कोई भी नहीं। हमने भारत के विभिन्न राज्यों में भ्रमण किया है और यह देखा है कि यदि वहां किसी मारवाड़ी का नाम लिया जाता है तो वह बड़ी इज्जत के साथ लिया जाता है। इसलिए नहीं कि उस मारवाड़ी व्यक्ति के पास बहुत धन है बल्कि इसलिए कि वह अपनी वचनबद्धता के कारण समाज में एक विशेष पहचान रखता है। इस कारण उसकी एक विशेष पैठ अन्य समाजों में भी है। इसके अलावा हमारी सरलता, अन्य समाजों की सेवा, उनके साथ मिलजुलकर कार्य करने की भावना और समरसता, शुद्ध खान-पान तथा धर्म और अध्यात्म के प्रति झुकाव हमारी विशेष पहचान रही है। लेकिन इन सबमें अब धीरे-धीरे गिरावट देखने को मिल रही है। आज बुद्धिजीवी मारवाड़ी समाज के व्यक्तियों के लिए यह चिन्तन आवश्यक हो गया है कि हम अपनी संस्कृति को किस प्रकार बचा कर रखें। नीचे कुछ ऐसे मुद्दों पर मैंने अपने विचार प्रकट किए हैं जिनसे हमारी संस्कृति को धक्का लगा है और जिसे रोकने का उपाय मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि से सुझाया है।

मांगलिक प्रसंगों पर भोन्डा प्रदर्शन रोकें

आज विवाह, जन्मोत्सव, सालगिरह एवं अन्य मांगलिक प्रसंगों पर यह देखने में आ रहा है कि खूब बढ़-चढ़कर के प्रदर्शन के साथ खर्चा किया जा रहा है। विवाह आदि उत्सवों पर सजावट करना कोई खराब बात नहीं है, लेकिन भोन्डा प्रदर्शन और सड़क पर नृत्य यह हमारी संस्कृति के विपरीत है। और, सबसे बड़े दुःख की बात तो यह है कि लाखों करोड़ों रुपये प्रदर्शन आदि पर खर्च करने वाले व्यक्तियों से उस समय छोटी सी रकम जैसे ५,००० रुपये भी सामाजिक सेवा या पुण्य के काम के लिए या अन्य सामाजिक कार्य के लिए आसानी से नहीं निकलते हैं। होना यह चाहिए कि अपनी हैसियत के हिसाब से विवाह किया जाए और ऐसा प्रदर्शन न हो जो आंख में खटके। इसके साथ हमें कभी भी बड़ी नकद राशि सगाई या विवाह के विभिन्न मांगलिक प्रसंगों पर नहीं देनी चाहिए। कई बार देखने में आता है कि सगाई या पहरावनी के समय लाखों रुपये के नोट सबके सामने लड़की वालों के द्वारा वर पक्ष के लोगों को दिए जाते हैं। यह हमारी संस्कृति के प्रति आघात है। इससे न केवल ईर्ष्या की भावना पनपती है, इससे सामाजिक गतिरोध भी बढ़ता है। हमें चाहिए कि हम इस प्रकार की चीजों को रोकें और जहां विवाह में हम अपनी हैसियत से खर्च कर रहे हैं वहां हम सामाजिक कार्यों के लिए भी दान या अनुदान अवश्य दें।

परिवारों को टूटने से बचाएं

एक समस्या जो मारवाड़ी समाज के सामने पिछले दो दशकों से उभर कर आई है वह है विवाह विच्छेद या तलाक की समस्या। छोटी-छोटी बात पर या मतभेद होने पर तुरन्त लड़के या लड़की की तरफ से विवाह विच्छेद का प्रश्न सामने आ जाता है और कई बार यह मामला कोर्ट तक भी पहुंच जाता है। सहनशीलता का गुण हमें नव दम्पत्ति को सिखाना होगा। स्वार्थपरता की भावना के स्थान पर सभी के दुखों में सम्मिलित होने की भावना को पनपाना यह सबका मिलाजुला कर्तव्य है। परिवार चाहे छोटा ही हो लेकिन यदि परिवार में बूढ़े मां-बाप या अन्य आश्रित परिजन हों तो उनकी देखभाल करना हमारी संस्कृति का अंग है। उन्हें समुचित आदर देना और उनकी देखभाल करना अति आवश्यक है। इसी प्रकार पति-पत्नी को चाहिए कि वे आपस के मन मुटाव को सौहार्द और त्याग की भावना से ओत-प्रोत होकर सुलझाएं। यह अत्यंत आवश्यक है। सास-बहु, ननद-भाभी आदि के रिश्तों में जो खटास दिन प्रतिदिन बढ़ रही है उसका मूल कारण स्वार्थपरता, अहम् और ईर्ष्या-द्वेष की भावना है। इसलिए हमें सद्गुणों का विकास करना चाहिए। हमारी सामाजिक संस्थाओं को चाहिए कि वे इस बारे में चिन्तन शिविर लगाएं और इन गुणों के विकास के बारे में उचित वातावरण समाज में पैदा करें ताकि हमारे परिवार टूटने से बच सकें। यह नितान्त आवश्यक है।

मांगलिक प्रसंगों पर हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा का प्रयोग

एक और नई विसंगति जो इन दिनों दृष्टिगोचर हो रही है वह है कि मारवाड़ी परिवारों के विवाह, सगाई, जन्म दिवस और दीपावली एवं रक्षा बंधन आदि के निमंत्रण पत्र अंग्रेजी में भेजे

जाने लगे हैं। हमें चाहिए कि ऐसे निमंत्रण पत्रों में हम हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं जैसे मारवाड़ी आदि का ही उपयोग करें। यदि यह नितान्त आवश्यक हो कि जिस व्यक्ति को हम निमंत्रण पत्र भेज रहे हैं वह हिन्दी नहीं समझता है, जैसे दक्षिण भारत के अपने किसी मित्र को ऐसा निमंत्रण भेजा जाए तो हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी निमंत्रण पत्र भेजा जा सकता है।

वचनबद्धता की पुन: पैठ स्थापित हो

मारवाड़ी संस्कृति की एक विशेषता जिसे इतर समाज वाले बहुत इज्जत की दृष्टि से देखते आए हैं वह है मारवाड़ी व्यक्ति की वचनबद्धता। पहले सारे भारतवर्ष में जहां भी किसी मारवाड़ी व्यक्ति को कोई अन्य समाज का व्यक्ति मिलता तो अक्सर यह कहता था कि भई आपकी जबान का हमें पूरा भरोसा है। अर्थात् उनकी वचनबद्धता की एक विशेष पैठ हमेशा रही है। आज दुर्भाग्य से यह देखने में आ रहा है कि कई मारवाड़ी व्यक्ति यदि किसी कारण से उन्हें नुकसान हो जाए तो तुरन्त अपने वचन से पलट जाते हैं और ''मैंने ऐसा कब कहा था'' कहने में नहीं हिचकिचाते। इसका अर्थ यह हुआ कि असत्य बोलने में भी वे नहीं हिचकिचाते। इसलिए हमारी संस्कृति की इस धरोहर को हमें पुन: प्रतिष्ठापित करना है और हमारी मारवाड़ी-सामाजिक संस्थाओं द्वारा एवं बड़ों के अपने कार्यकलापों द्वारा हमें इस गुण को हमारी युवा पीढ़ी तक पहुंचाना है कि मारवाड़ी समाज की वह विशेषता है कि ''प्राण जाए पर वचन न जाए''। यह मारवाड़ी समाज का आभूषण रहा है और भविष्य में भी रहना चाहिए। तब हमारी संस्कृति की प्रतिष्ठा पुन: प्रतिष्ठापित हो सकेगी।

खान-पान शुद्ध हो

मारवाड़ी संस्कृति की सबसे अधिक गिरावट जो पिछले दो दशकों में हुई है वह है हमारे खान-पान में गिरावट। मारवाड़ी समाज शाकाहारी समाज है और रहा है। इसी प्रकार मारवाड़ी समाज में शराब जैसी चीज को कभी भी अच्छी निगाह से नहीं देखा गया। पर आज समृद्ध परिवारों में खुले आम पार्टी दी जाती है और अपने आप को समाज में पैसे वाले कहलाने वाले व्यक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति उसमें खुलेआम 'कॉकटेल' के नाम पर शराब पीते हैं और पिलाते भी हैं। यह हमारी संस्कृति का पतन है। हमें याद रखना चाहिए कि शराब पांच महापापों में से एक गिना गया है। हमारे उपनिषदों में, वेदों में और धर्म शास्त्रों में इसकी बराबर निन्दा लिखी गई है। छन्दोग्योपनिषद् में निम्न श्लोक में जो पांच महापाप गिनाए हैं उनमें शराब एक प्रमुख है। छन्दोग्योपनिषद् (५-१०-९) में निम्न श्लोक ध्यान देने योग्य हैं-

''स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबंश्च गुरोस्तल्पमावसन्ब्रह्महारां चैते
पतन्ति चत्वार: पंचमश्चाचरंस्तैरिति।''

अर्थात् सोने की चोरी करने वाला, गुरु पत्नी गमन करने वाला, मदिरा (शराब) पीने वाला और ब्राह्मण की हत्या करने वाला ये चारों महापापी हैं। और, जो इनकी संगत करता है वह पांचवां व्यक्ति भी महापापी है।

हमने तो वह जमाना देखा है जबकि 'शराब' शब्द को मुंह से भी नहीं बोला जाता था व पीने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। अतएव यह अत्यंत आवश्यक है कि हम शराब का सेवन घर पर या बाहर और सामाजिक तथा मांगलिक उत्सवों में नहीं करें। इसे सर्वदा त्याज्य ही समझें। जो व्यक्ति शराबी हों उनका सामाजिक सम्मान नहीं करें।

इसके साथ-साथ हमारा खान-पान भी बहुत बिगड़ रहा है। आजकल यह देखने में आता है कि हमारे समाज के युवक चोरी-छिपे से ही सही होटलों में जाकर अन्डा, मांस और मछली आदि का सेवन करते हैं। यह जहां एक ओर निन्दनीय है और स्वास्थ्य के लिए घातक है वहां यह संस्कृति का पतन भी करता है। धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी यह हमारा पतन करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ोंके द्वारा अब यह स्पष्ट हो गया है कि उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से सन्तुलित शाकाहार में समुचित कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, खनिज पदार्थ और आवश्यक विटामिन मिलते हैं। इसलिए हमें धार्मिक, आध्यात्मिक और दया तथा अहिंसा की दृष्टि से सदैव शाकाहार ही करना चाहिए। एक और भूल व्यवहार में देखी जाती है- वह है जन्मतिथि आदि के प्रसंगों पर शाकाहारी परिवारों में भी केक का काटना। केक के काटने में तो कोई दोष नहीं है लेकिन हमें पूरी तरह से यह पता लगाना चाहिए कि वह 'एग-लेस' अर्थात् अंडा रहित केक हो। इसके अलावा हमें पांच सितारा होटलों में भोजन करते समय रसियन सलाद से बचना चाहिए क्योंकि उसमें अंडा मिश्रित होता है। इसी प्रकार कई विदेशी टाफियों में अंडा, गाय की चर्बी और अन्य मांसाहार के तत्व रहते हैं। इसलिए कोई भी विदेशी या देशी टॉफी खाने के पूर्व हमें उसमें क्या-क्या चीजें सम्मिलित हैं पढ़ लेना चाहिए ताकि वे मारवाड़ी परिवार जो वैसे तो पूर्णत: शाकाहारी हैं पर भूल से 'मांसाहारी' न हो जाएं।•

ने से

दो मुक्तक

ओ मनोज! ओ मन्मथ!
सुकृत पुरुष, विकृति धाम,
जयति काम।
अमित रूप, अमित नाम
इस युग के सियाराम
सुधा काम।

- जगदीश गुप्त

डरते हो? किससे?
ईश्वर से? मूर्ख हो।
मनुष्य से? कायर हो।
पंचभूतों से? उनका सामना करो।
अपने से? जानो अपने आप को।
कहो- अहं ब्रह्मास्मि।

- स्वामी रामतीर्थ

सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में सजग हो युवक समाज

✍ आत्माराम सोन्थलिया, कलकत्ता

बीसवीं शताब्दी में मारवाड़ी समाज ने आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सभी क्षेत्रों में प्रगति की और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी दृढ़ पहचान बनाई। मारवाड़ी समाज को एक सशक्त नेतृत्व मिला तथा उसके द्वारा सभी क्षेत्रों के लिए विविध विस्तृत कार्यक्रम दिया गया। आर्थिक क्षेत्र तो जैसे मारवाड़ी का पर्यायवाची बन गया। देश के सर्वाधिक सम्पन्न प्रथम दस घरानों या उद्योग समूहों में ७ या ८ मारवाड़ी घराने ही थे। सामाजिक क्षेत्र में भी सामाजिक रूढ़ियों यथा- बाल विवाह, पर्दा प्रथा, मृतक भोज, छुआछूत, स्त्री-शिक्षा, विदेश गमन पर बहिष्कार आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन हुए तथा जनचेतना जागृत हुई। परिणामत: आज ये सारी कुप्रथायें समूलत: नष्ट हो गई हैं। इसी प्रकार हमारे समाज ने राजनैतिक क्षेत्र में भी अपनी सराहनीय भूमिका अदा की। स्वतंत्रता आंदोलन में परोक्ष में आर्थिक रूप से उसे संबल तो प्रदान किया ही प्रत्यक्ष रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में समाज के सभी वर्ग के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिसका विस्तृत बखान इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है।

किन्तु इक्कीसवीं शताब्दी के स्वर्णिम उषाकाल से पूर्व ही स्थितियों में भयानक परिवर्तन परिलक्षित होना शुरू हो गया। २१वीं सदी के युवक को विरासत में जहां २०वीं सदी के हमारे पूर्व पुरुषों द्वारा संजोई हुई विराट आर्थिक एवं सामाजिक थाती तो मिली पर उसके पास न तो कोई सुस्पष्ट कार्यसूची है और न कोई लक्ष्य। इस किंकतर्व्यविमूढ़ता की स्थिति में मार्गदर्शन तथा लक्ष्य निर्धारण का दिशा-निर्देश प्रदान करने वाला सुयोग्य नेतृत्व का तो जैसे लोप ही हो गया है।

आजादी के बाद विदेशी शासक तो विदा हुए पर उनके स्थान पर गोरी चमड़ीवालों के बदले जो काली चमड़ीवाले साहब आये उन्होंने राष्ट्रीय अथवा सामाजिक क्षेत्र में कोई ऐसा प्रेरणादायक अथवा जन-जन को एक सूत्र में बांधने का कार्य नहीं किया उल्टे अपने स्वयं तथा अपने परिवारजनों के पोषण की तिकड़में भिड़ाकर अपना ही वर्चस्व बना रहे इसकी भरपूर चेष्टा की। परिणामत: आज का युवक एक प्रकार की निराशा या हताशा का शिकार हो गया।

इस कृष्ण पक्ष के समानान्तर एक और तथ्य जो उभरकर आया है वह है नई पीढ़ी की सोच एवं कर्तव्य में गुणात्मक परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है। २१वीं सदी के युवक में राजनीति, शिक्षा, अर्थजगा तथा सामाजिक क्षेत्र में पहले के लोगों की तरह लीक पर चलने की परम्परा से परे हट कर एक नई सोच पैदा हुई है।

आज का युवक राजनीति के सारे इतिहास, भूगोल और केमिस्ट को पूरी तरह समझकर उसमें सक्रियता से संलग्न होकर अपनी स्वतंत्र पहल बनाने को आतुर है। वह अब राजनैतिक दलों का अर्थ संरक्षक या कोषाध्यक्ष बनकर रह जाने से संतुष्ट नहीं लगता। नई पीढ़ी के युवक-युवतियां नगर निगम से लेकर विधानसभा, संसद तक में प्रवेश कर अपने हस्ताक्षर करने को व्याकुल हैं। उन्हें यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ गई है कि विधायिकाओं एवं संसद में अपने आर्थिक एवं सामाजिक हितों की सुरक्षा हेतु अब स्वयं ही आगे होकर दृढ़तापूर्वक अपनी बात रखनी होगी। अन्य समाज के लोगों के अथवा चुनिन्दा पुराने अपने ही समाज के नेताओं के माध्यम से अब वह कार्य अपनी इच्छानुरूप संभव नहीं लगता कारण उन नेताओं की अपनी विवशता अथवा निहित स्वार्थ आड़े आते हैं। यह एक शुभ लक्षण है कारण 'अपना हाथ जगन्नाथ' अथवा अपने स्वयं करने से ही कार्यसिद्धि होती है। समाज के युवक-युवतियां इस दिशा में पर्याप्त संख्या में संलग्न दिखाई दे रहे हैं पर इस प्रयत्न में और अधिक सक्रियता की आवश्यकता है। साथ ही सामाजिक संगठनों की भी इस बारे में महती भूमिका है। पूरा समाज संगठित हो, एक होकर एक बृहत् 'वोट बैंक' का आभास सभी राजनैतिक दलों को हो ताकि वे समाज के किसी भी व्यक्ति या प्रत्याशी की बात की उपेक्षा करने का दु:स्साहस न कर सके।

किंतु राजनीति एकओर उन्मुख प्रगतिगामी समाज २१वीं शताब्दी में अपने देशार्थिक शीर्ष स्थान को पुन: प्राप्त करने का भगीरथ प्रयत्न कर नहीं तो बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में अवनति का जो क्रम प्रारंभ हुआ है वह इसे पुन: महाजन से बनिया multimillionaire to trader न बना दे। पिछले कई वर्षों में, जब से ग्लोबलाइजेशन की प्रचंड लहर चली है, समाज के युवक उसे आत्मसात् कर तदनुरूप अपने आर्थिक कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित करने की चेष्टा में हैं पर समाज के प्रबुद्ध अर्थ विशेषज्ञों तथा चिन्तनशील व्यक्तियों को उन्हें आगाह करना है कि

किन कारणों से समाज के व्यक्ति आर्थिक क्षेत्र में पिछड़ते गये और अन्य लोगों ने सर्वोच्च स्थानों पर कब्जा जमा लिया। उन्हें बाजार के रुख को समझते हुए तदनुसार अपना एक्शन प्लान बनाना है। आज 'प्रोफेशनल मैनेजमेंट' की हवा बह रही है। उन्हें भी उपयुक्त प्रोफेसनल मैनेजरों के माध्यम से अपने उद्योग व्यापार को चलाना है। साथ ही विश्व की मल्टीनेशनल कंपनियों से भी टक्कर लेकर अपने उत्पादों की विशेषता, अनिवार्यता प्रमाणित करनी है और देश की अपनी साख बनाई रखनी है। यह सुखद तथ्य है कि आज का युवक अब देश के अथवा विदेशों के मैनेजमेंट/बिजनेस स्कूलों से सुचारू शिक्षा प्राप्त कर निकल रहा है। पर प्राय: अधिकांश युवक दूसरी विदेशी मल्टीनेशनल कंपनियों में ही सीईओ बनकर सुविधाभोगी प्रवृत्ति की ओर उन्मुख है। उसका ध्यान अपने स्वयं के अथवा अपने पैतृक उद्योग-व्यवसाय को समय की आवश्यकता के अनुसार विस्तार देकर समृद्ध बनाने की ओर होना चाहिए।

शिक्षा तथा विदेशों से निकट सम्पर्क के कारण आज के युवक में अद्‌भुत परिवर्तन भी लक्षित हुआ है। वह एक ओर जहां रूढ़ियों की बेड़ियों से मुक्त हुआ है वहीं एक प्रकार की अराजकता भी उसमें आई है। उसे अपने सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक मान्यताओं तथा पारिवारिक परम्पराओं के सम्मान करने में जैसे बिल्कुल रुचि नहीं है। एक विचित्र भयावह स्थिति बन गई है। विदेशी लोग हमारी समृद्ध-उपयोगी सांस्कृतिक विरासत को वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय कसौटी पर कसकर उसकी प्रशंसा कर अनुगमन करने का मन बना रहे हैं, हमारा युवक विदेशी अप संस्कृति के चक्रव्यूह में फंस कर पतोन्मुख होने को आतुर दिख रहा है। इस दिशा में और अधिक गिरावट की आशंका है क्योंकि किसी प्रकार का कोई पारिवारिक या सामाजिक अनुशासन नहीं है और न कोई भय।

इसी प्रसंग में २१वीं शताब्दी के युवक को अच्छी तरह समझना होगा कि यदि उसे अपनी सर्वतोमुखी उन्नति करनी है तो उसे अपनी सामाजिक दायित्वों का पूरी जिम्मेवारी के साथ निर्वाह करना होगा। हमारी सामाजिक मान्यताओं और उनको पूरी सतर्कता के साथ पालन करने से ही हमारा समाज सबमें सिरमौर बना था। आज का युवक पूर्णत: अपने मूल-गांव, देश से तो पीढ़ियों के प्रवास के कारण से कट गया है। उसकी सामाजिक कार्यों में भी कोई रुचि नहीं रह गई। बीसवीं शताब्दी के सामाजिक जागृति के शंखनाद की ध्वनि अब खो सी गई है। स्वयं समाज या और आगे बढ़ें तो परिवार तक में भयानक बिखराव आ गया है। परिवार की परिभाषा संकुचित होकर अब वह 'न्यूक्लीयर फैमिली' का रूप ग्रहण कर चुका है, स्वयं, पति या पत्नी तथा १ से २ बच्चे, अब यही परिवार का स्वरूप रह गया है यह आसन्न संकट का सूचक है।

इन सारी बातों पर इक्कीसवीं शताब्दी के युवक को गंभीरता से मनोयोग पूर्वक चिंतन कर अपने लक्ष्य और कार्यक्रम निर्धारित करने होंगे। इस प्रसंग में सामाजिक संस्थाओं और उसके 'थिंक टैंक' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें ही हमारे युवक/युवतियों को मार्गदर्शन प्रदान कर उनकी दशा और दिशा का अंगुल्यानिर्देश कराना है अन्यथा आनेवाली पीढ़ी उन्हें ही दोष का भागी समझेगी।●

कुछ अपना

परछाइयां सब
जीवन अभी ताक पर पड़ा
गुजरनेवालों के चिह्न
लिए फिरते हम
संवारेंगे कभी सुनहरे सपने
अभी सोए कहां!
काफिला निकल जाए
अकेले पड़ जाएं
कोई हर्ज नहीं
टटोलेंगे, स्वर प्रतिबिम्ब
अपना रचेंगे, कुछ नवीन
सांचे में कला जीवन चारों तरफ
बदबू आती रिसते घावों की
जल्दी नहीं कोई सोच लें जरा
खुद बनाएंगे रास्ते
फिर चाहे भटकें या पार लगें,
चलना है ही, जाना है ही
जीवन को मुक्ति दिलाएं
अपना बनाएं, सजाएं
फिर चलें, कहीं चलें।

- विष्णु दत्त जोशी

परिवर्तन के दर्पण में मारवाड़ी समाज

✍ शम्भु चौधरी

समय के परिवर्तन के साथ-साथ प्रत्येक समाज का भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है और जो समाज इस परिवर्तन को नहीं स्वीकारता वहां समय भी ठहर जाता है। समय का ठहरना समाज को खंडहर में बदलना-सा, कहा जा सकता है। मारवाड़ी समाज में दिख रहे परिवर्तन इस बात का सूचक है कि समाज की सोच जीवित है, समय के साथ-साथ समाज ने अपने अन्दर भी कई तरह के बदलाव लाये हैं, उदाहरण के तौर पर ही लें- १. कारोबार को शिक्षा से जोड़ना, २. धार्मिक रूढ़ियों को जरूरत के अनुसार बदलना, ३. सामाजिक कुरीतियों व परम्पराओं में समयानुकूल सुधार करना।

कारोबार को शिक्षा से जोड़ना

पहले समाज में यह धारणा सी घर कर गई थी कि ''पढ़ कर कै करसी-बाप को काम कुन देखसी'' अर्थात् लड़का यदि पढ़ लेगा तो दुकान, गद्दी इत्यादि कौन चलाएगा, गुरु जी की पाठशाला में 'जोड़' पढ़ना-लिखना जान लेना ही काफी माना जाता था। धीरे-धीरे समय के साथ इसमें परिवर्तन देखने को मिला, आज तो कारोबार का अर्थ ही बदल गया है, हर व्यापारी जो खुद नहीं पढ़ पाये थे, अपने बच्चों को सीए, एमबीए जैसे कोर्स कराने में लगे हैं। पहले जो लोग सेल्स टैक्स अधिकारी के नाम से ही कांपते थे, अब वे ही लोग उनसे बराबर का तर्क करते पाए जाते हैं। इनका मनोबल काफी मजबूत हुआ है। कारोबार करने के तरीके में भी बदलाव देखने को मिलता है।

धार्मिक रूढ़ियों को जरूरत के अनुसार बदलना

धार्मिक परम्पराएं कई मायने में सामाजिक शिक्षा का काम करती हैं, परन्तु जब ये परम्पराएं रूढ़िवादिता में बदल जाती हैं, तो इसे समय के अनुसार बदलते रहना जरूरी हो जाता है। मसलन मारवाड़ी समाज में 'सती' की पूजा प्राय: सभी घरों में होती है, कुछ वर्ष पूर्व 'देवराला' सती काण्ड हुआ तो लोगों ने स्वत: यह महसूस किया कि 'जलती नारी का चित्रण' समाज में रूढ़िवादिता को फैलाने में मदद कर रही है। समाज ने इस कुरीति को बदलने का निश्चय किया। आज प्राय: सभी मंदिरों में त्रिशूल व सतीया की ही पूजा 'सती' का रूप मानकर की जाती है। इसी प्रकार अन्य भी कई उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं, जिसमें मृतक बिरादरी भोज, विधवा विवाह आदि जैसे कई उदाहरण है, जिसे धर्म के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। धार्मिक रीति-रिवाज, पर्व त्यौहार, लोग अपनी स्थानीय मान्यताओं के आधार पर मनाते रहते हैं, कुछ परिवार इनमें बदलाव की बात सोचता है, वहां से उस परिवार में कालान्तर में परिवर्तन की कड़ी बनकर पुन: वही मान्यता का रूप ले लेती है। एक जमाने में किसी विधवा के विवाह की बात तक करना अपराध माना जाता था, आज कई अवसरों पर विधवा को स्वयं विवाह हेतु पहल करते देखा जा सकता है। यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन समाज में हुआ है, जिसे सार्वजनिक रूप से मान्यता प्राप्त है।

सामाजिक कुरीतियों व परम्पराओं में समयानुकूल सुधार करना

हालांकि समाज में कई ऐसी प्रथाएं हैं, जिससे धर्म कोई सरोकार नहीं रखता, ये प्रचलन समाज के अन्दर ही पनपता है, उदाहरण स्वरूप ही लें- दहेज देना अथवा लेना, बारातियों को कई तरह के व्यंजन परोसना, पर्व-त्यौहारों के अवसर पर उपहार देना, जन्म दिवस, शादी की सिलवर जुबली अथवा अन्य कोई अवसर पर आडम्बर युक्त दावत देना, यह एक ऐसी समस्या है, जिसे हमने पूर्व में जितनी कड़ाई से रोकने का प्रयास किया, यह बीमारी उतनी ही तेजी से फैलती गई। कहने का सीधा सा मतलब यह है कि हमारा समाज वैचारिक 'कैंसर' से ग्रस्त हो चुका है, 'कैंसर' को छेड़ने का अर्थ है, उसका प्रसार। इसे मूल रूप से उसी स्थान पर जला देना चाहिए। इन समस्याओं की तरफ कई जगह युवा वर्गों में चेतना देखी गई है। कई तरह के नियम बनते रहते हैं, तोड़ने वाले भी होते हैं, तो नियमों को मानने वाले भी, भले ही इसकी रफ्तार कम आंकी जाती हो, लेकिन शकून इस बात का है कि एक वर्ग यह बात मानने लगा है कि यह सब बन्द होना चाहिए। हो तो कम से कम आडम्बर न हो।

इन सबके अलावा एक नया बदलाव समाज में तेजी से हो रहा है, लड़का एवं लड़की की आपस में दोस्ती, ये दोस्ती भले ही जमाने के कुछ लोगों को नापसंद हो, परन्तु नये युग के मां-बाप यह चाहते हैं कि उनका लड़का या लड़की किसी स्वजातिय योग्य लड़के या लड़की से दोस्ती जरूर करे, दोस्ती योग्य व घराना अच्छा हो तो यह दोस्ती धीरे-धीरे शादी के बंधन में बंधने में काफी सहायक होती है। ऐसी शादी में दोनों तरफ से मां-बाप को जहां आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ता, लड़की के लिए लड़का या फिर लड़का के लिए लड़की खोजने के झंझट से भी छुटकारा मिल जाता है। कुछ मायने में यहां सावधानी जरूरी होती है, वह संस्कार मां-बाप को ही बच्चों में डालने पड़ते हैं। यदि मां-बाप कहीं कमजोर हैं, तो बात अलग है।

जो समाज समय के साथ-साथ अपने रहन-सहन में बदलाव लाता रहता है, उसे प्रगतिशील समाज की संज्ञा दी जाती है। उपरोक्त बातें मारवाड़ी समाज को प्रगतिशील श्रेणी में ला खड़ा कर दिया है। जो छात्र, खिलाड़ी न. एक में होता है, उसे निरन्तर कड़ी मेहनत की जरूरत होती है, इसी प्रकार मारवाड़ी समाज के प्रबुद्ध वर्ग को और अधिक सजग व सावधान होने की जरूरत है।●

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी समिति की बैठक का कार्यवृत्त

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति** की बैठक दिनांक **३० जुलाई २००५**, को **कोलकाता** में सम्मेलन सभापति **श्री मोहनलाल तुलस्यान** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिये गए :

डायरेक्टरी का प्रकाशन आगामी दुर्गापूजा के पूर्व करने का निर्णय लिया गया। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में अखिल भारतीय समिति की बैठक ११ सितम्बर २००५, रविवार को करना तय किया गया। सम्मेलन की साधारण वार्षिक सभा शीघ्र बुलाकर सन् २००३-०४ तथा सन् २००४-०५ के अंकेक्षित आय-व्यय एवं आर्थिक चिट्ठे को स्वीकृत कराने का निर्णय लिया गया। सम्मेलन का ७१वां स्थापना दिवस समारोह २४ दिसम्बर शनिवार की शाम को विद्यामंदिर में मनाये जाने एवं इस अवसर पर समाज विकास का विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। आगामी १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष में मारवाड़ी सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय झण्डोत्तोलन समारोह आयोजित करने एवं सम्मेलन भवन में दानदाताओं की नाम तालिका संगमरमर शिलापट्ट पर अंकित कर स्थापित करने का निर्णय लिया गया। सभापति श्री तुलस्यान ने सदस्यों से समाज विकास में अधिक से अधिक विज्ञापन देने का अनुरोध किया।

कोलकाता : ५९वां स्वाधीनता दिवस समारोह आयोजित

स्वाधीनता दिवस समारोह के उपलक्ष में उपस्थित सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों में परिलक्षित हैं बाएं से बैठे हुए सर्वश्री परशुराम तोदी 'पारस', आत्माराम तोदी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार एवं इन्दरचन्द संचेती। खड़े हैं बाएं से सर्वश्री प्रदीप ढेडिया, विश्वनाथ धानुका, बंशीलाल बाहेती, जुगल किशोर जैथलिया, सुभाष मुरारका, ताराचन्द पाटोदिया, सूर्यकरण सारस्वा, आत्माराम सोंथलिया एवं ओम लड़िया।

१५ अगस्त २००५। अखिल भातरवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ५९वां स्वाधीनता दिवस समारोह सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में मारवाड़ी सम्मेलन भवन में मनाया गया। राष्ट्रीय पताका का उत्तोलन माननीय अध्यक्ष के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय गान का सामूहिक गायन के उपरान्त माननीय अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सदस्यवृन्दों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई है और अब आवश्यकता है आर्थिक आजादी की। हम आर्थिक आजादी प्राप्त कर सकें उस दिशा में अब सोचने की आवश्यकता है। मारवाड़ी समाज की राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में बहुत बड़ी भूमिका रही है। हमारे समाज के लड़के-लड़कियां अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी अपने कठोर श्रम, लगनशीलता एवं ज्ञान के बल पर देश और समाज के नाम को गौरवान्वित कर रहे हैं। यह समाज एक उन्नत समाज है। आज आवश्यकता है आपस में एक जुट होकर इसे उत्थान की दिशा में और अग्रसर करने की, समाज के कमजोर वर्ग को ऊपर उठाने की।

इस अवसर पर उपस्थित होकर कार्यक्रम का मान बढ़ाने वालों में थे सर्वश्री सीताराम शर्मा- राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भानीराम सुरेका- राष्ट्रीय महामंत्री, रामऔतार पोद्दार- राष्ट्रीय सं. महामंत्री, इन्द्रचंद संचेती, सूर्यकरण सारस्वा, जुगलकिशोर जैथलिया, सुभाष अग्रवाल, बंशीलाल बाहेती, आत्माराम सोंथलिया, विश्वनाथ धानुका, ओम लडिया, आत्माराम तोदी, प्रदीप ढेडिया, परशुराम

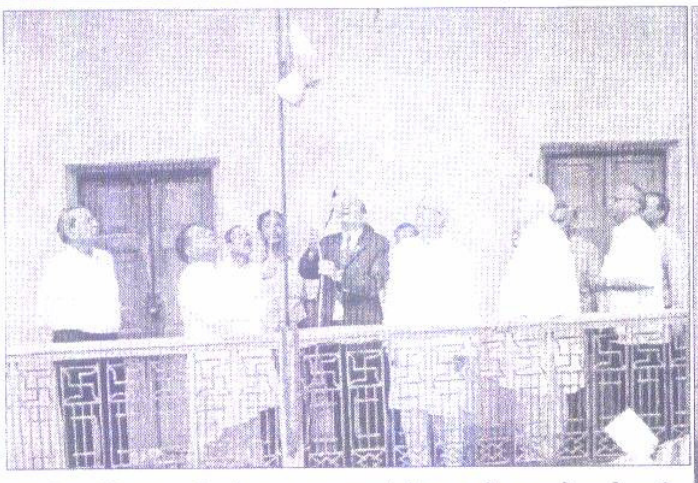

स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर झण्डोत्तोलन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान। साथ में हैं सर्वश्री आत्माराम सोंथलिया, महामंत्री भानीराम सुरेका, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, संयुक्त महामंत्री रामऔतार पोद्दार, आत्माराम तोदी, जुगल किशोर जैथलिया, बंशीलाल बाहेती, ओम लड़िया, ताराचन्द पाटोदिया आदि।

सम्मेलन भवन में दानदाताओं के संगमरमर शिलापट्ट पर अंकित नाम।

मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से होटल ताज, कोलकाता में झारखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुण्डा का स्वागत करते हुए सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका। साथ में हैं सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सन्तोष शराफ व श्री प्रभाष मित्तल।

तोदी 'पारस', रवि तुलस्यान, ताराचन्द पाटोदिया एवं सम्मेलन के सभी कर्मचारी वृन्द। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन भवन में दानदाताओं के शिलापट्ट पर अंकित नामों का उद्घाटन किया गया।

कोलकाता : अर्जुन मुण्डा का स्वागत

पिछले दिनों झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुण्डा के कोलकाता आगमन पर होटल ताज में स्वागत किया गया। स्वागत समारोह में उपस्थित थे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री संतोष शराफ व श्री प्रभाष मित्तल आदि।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : मारवाड़ी पार्षदों का अभिनंदन

नवनिर्वाचित मारवाड़ी पार्षदों के सम्मान समारोह में बाएं से प्रांतीय अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया, पार्षद श्रीमती मीना पुरोहित, पार्षद सुश्री श्वेता इन्दोरिया, पार्षद श्रीमती सुनिता झंवर, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, पूर्व उपाध्यक्ष श्री रतन शाह एवं अन्य सदस्यगण।

४ जुलाई २००५। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कोलकाता नगर निगम के हाल में हुए चुनाव में विजयी मारवाड़ी पार्षदों का अभिनंदन स्थानीय राजस्थान सूचना केन्द्र में किया गया। संयोगवश सभी

विजयी तीनों मारवाड़ी पार्षद महिलाएं हैं। पूर्व उपमेयर मीना पुरोहित एवं पूर्व पार्षद सुनीता झंवर ने हैट्रिक लगाते हुए लगातार तीसरी बार विजय प्राप्त की है तो सुश्री श्वेता इन्दोरिया इस बार के चुनाव में सबसे कम २२ वर्षीय विजयी पार्षद हैं।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन के प्रांतीय सभापति श्री लोकनाथ डोकानिया ने की एवं मुख्य वक्ता थे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा जिन्होंने महिलाओं की राजनीति में सक्रिय भागीदारी को मारवाड़ी समाज के बदलते स्वरूप एवं तस्वीर का द्योतक बताया। सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष श्री रतन शाह ने इसे समाज का गौरव बताया।

श्रीमती मीना पुरोहित ने राजनीति को धर्म एवं कर्त्तव्य मानकर चलना बताया एवं श्रीमती झंवर ने अपनी जीत को अपने कामों की सफलता माना। सुश्री श्वेता इन्दोरिया ने कहा कि उन पर अपने मतदाताओं के सेवा की बड़ी जिम्मेवारी है। समारोह का संचालन सम्मेलन के प्रांतीय मंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने किया एवं विश्वनाथ सुल्तानिया ने धन्यवाद दिया।

दुर्गापुर : दुर्गापुर मारवाड़ी सम्मेलन के २००५-०७ के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी का निर्वाचन

६ जून २००५। दुर्गापुर मारवाड़ी सम्मेलन की एक साधारण सभा में सत्र २००५-०७ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी व कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित हुए-

सलाहकार : सर्वश्री निरंजनलाल जैन, सत्यनारायण शर्मा, रघुनाथ प्रसाद अग्रवाल, हजारीमल अग्रवाल, अध्यक्ष श्री सांवरमल खण्डेलवाल, उपाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण शर्मा, मंत्री श्री रामरतन अग्रवाल, उपमंत्री श्री अशोक काजरिया, कोषाध्यक्ष श्री अशोक बाजोरिया। सदस्यगण : सर्वश्री शंकरलाल शर्मा, गजानंद अग्रवाल, अनिल अग्रवाल, नरेश मुरारका, भंवरमल अग्रवाल, राधेश्याम अग्रवाल। मनोनीत सदस्य हैं- सर्वश्री रमेश चौधरी, श्यामलाल अग्रवाल, कमल कांवटीया एवं सन्तोष माहेश्वरी।

दुर्गापुर : आशीष मेगोटिया को जान से मार डालने की धमकी

१४ जुलाई। पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिला में पाण्डेश्वर निवासी श्री अशोक कुमार मेगोटिया के २१ वर्षीय व्यवसायी पुत्र श्री आशीष कुमार मेगोटिया पिछले ३० जून से लापता हैं जिनको कि अपहृत कर लिए जाने की संभावना है। अपहर्ताओं ने श्री मेगोटिया के एक रिश्तेदार के घर फोन कर फिरौती के रूप में भारी रकम की मांग की है अन्यथा उसे जान से मार देने की धमकी दी है। अपहृत व्यवसायी को खोज निकालने के लिए पुलिस सक्रिय है। स्थानीय विधायक श्री मलय घटक ने पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री से इस विषय में शीघ्र ही ठोस कार्यवाही करने का अनुरोध किया है।

पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष

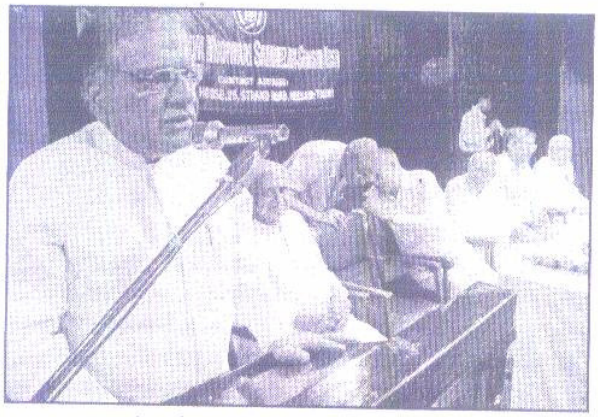

प. ब. मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष द्वारा छात्रवृत्ति वितरण समारोह में अपने विचार रखते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका। पास में बैठे हुए हैं साधुराम बंसल, बाबूलाल अग्रवाल, मामराज अग्रवाल, परमानंद चूड़ीवाल, सतीष देवड़ा आदि।

कोलकाता : छात्रवृत्ति वितरण समारोह आयोजित

९ जुलाई। पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष द्वारा छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए 'दैनिक विश्वमित्र' के सम्पादक श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि छात्रवृत्ति प्रदान करना स्तुत्य कार्य है। गरीब एवं जरूरतमंद छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति के महत्व का आंकलन कर पाना बहुत कठिन है। देखने में यह भले ही बहुत कम धनराशि नजर आए, किन्तु इससे किसी मेधावी छात्र का भविष्य सुधर जाता है। छात्रवृत्ति से ही डा. राजेन्द्र प्रसाद, बाबू जगजीवन राम ने अपनी शिक्षा पूरी की और देश के सबसे ऊंचे मुकाम तक पहुंचे। मेरे दादाजी बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल भी छात्रवृत्ति के सहारे पढ़े थे और विशाल साम्राज्य खड़ा किया। गरीब वर्ग के छात्र-छात्राएं पढ़ना चाहते हैं, किन्तु दिन-प्रतिदिन महंगी होती जा रही शिक्षा उनकी राह में अवरोध बन जाती है। ऐसे छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर सम्मेलन उन्हें अन्धकार से निकालकर प्रकाश की ओर ले जा रहा है। इस नेक कार्य को विस्तारित कर जारी रखना चाहिए। मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं विशिष्ट अतिथि श्री साधुराम बंसल ने भी समारोह को सम्बोधित किया। ८३ विद्यालयों के २३५ छात्र-छात्राओं को ३,५०,०००/- रुपये की छात्रवृत्ति दी गई।

शिक्षा-कोष के अध्यक्ष श्री मामराज अग्रवाल ने छात्रवृत्ति योजना की जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री परमानन्द चूड़ीवाल ने एवं संचालन शिक्षा-कोष के सचिव श्री बाबूलाल अग्रवाल ने किया।

कार्यक्रम की सफलता में सर्वश्री गौरीशंकर कांया, श्याम सुन्दर बगड़िया, सतीश देवड़ा, किशनलाल बजाज, कृष्ण कुमार लोहिया, कुंजबिहारी अग्रवाल, रामनाथ झुनझुनवाला, घनश्याम शर्मा, परमेश्वरी लाल गुप्ता का योगदान प्रशंसनीय था।

शिक्षा कोष द्वारा छात्रवृत्ति वितरण के अवसर पर सभागार में बैठे हुए पदाधिकारी, सदस्य एवं अभिभावकगण।

मारवाड़ी बालिकाएं राजस्थानी गीत-नृत्य प्रस्तुत करती हुईं

कोलकाता : पारिवारिकी के बच्चों में वस्त्र वितरण

स्वतंत्रता दिवस की वर्षगांठ पर पश्चिम बंग मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष द्वारा पारिवारिकी विद्यालय के लगभग ५५० विद्यार्थियों को स्कूल के परिधान (यूनिफार्म) वितरित किये गये। उल्लेखनीय है कि इस स्कूल के विद्यार्थी स्थानीय बस्ती के हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल ने की। इस अवसर पर प्रधान अतिथि थे। श्री धर्मचन्द्र अग्रवाल, श्री परमानंद गोयल और श्री महावीर प्रसाद माणकसया। प्रधान वक्ता दैनिक छपते-छपते के संपादक श्री विश्वम्भर नेवर थे। स्कूल के विद्यार्थियों ने देशभक्ति के गीतों का कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। संस्था के अध्यक्ष श्री मामराज अग्रवाल ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के संयोजक श्री किशनलाल बजाज एवं श्री कृष्ण कुमार लोहिया थे। संचालन मंत्री श्री बाबूलाल अग्रवाल ने किया।

उक्त अवसर पर सर्वश्री मदनलाल सराफ, श्याम सुंदर बगड़िया, रामनाथ झुनझुनवाला, घनश्याम शर्मा, मदनलाल अग्रवाल, श्याम अगरवाल, पराक्रम सिंह भंडारी, श्रीमती सुष्मिता गुप्ता, किरण जालान आदि सक्रिय थे।

पारिवारिकी विद्यालय के विद्यार्थियों को परिधान वितरण के अवसर पर परिलक्षित हैं दाहिने से सर्वश्री मामराज अग्रवाल, प्रह्लाद राय अग्रवाल, महावीर प्रसाद माणकसया, परमानंद गोयल, दैनिक छपते-छपते के सम्पादक विश्वम्भर नेवर, बाबूलाल अग्रवाल, कृष्ण कुमार लोहिया एवं पारिवारिकी की संचालिका श्रीमती सुस्मिता गुप्ता।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना : आरक्षी महानिदेशक को स्मार पत्र

बिहार में बढ़ती हुई आपराधिक घटनाओं के संदर्भ में प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला सहित प्रांतीय पदाधिकारियों ने आरक्षी महानिदेशक से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें एक स्मार पत्र दिया जिसमें अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ कर उन्हें सजा दिलाने, पीड़ित परिवार को सरकार की ओर से मुआवजा देने की व्यवस्था करने, धमकियों से ग्रस्त परिवार को सरकारी सुरक्षा मुहैया कराने, पुलिस एवं जनता समन्वय समिति का गठन करने, आर्म्स लाइसेंस दिए जाने, व्यापारिक क्षेत्रों में पुलिस गश्ती दिए जाने इन छ: बिन्दुओं पर विशेष कार्रवाई करने का अनुरोध किया गया है। आरक्षी महानिदेशक ने समस्याओं के निराकरण के लिए त्वरित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है।

पटना : छात्रवृत्ति की राशि में बढ़ोत्तरी

२६ जून। बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना के महासचिव श्री प्रह्लादराय शर्मा द्वारा प्रदत्त जानकारी अनुसार छात्र-छात्राओं की मांगों के मद्देनजर शिक्षा समिति की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक श्री महेन्द्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि छात्रवृत्ति की राशि में निम्न दर से बढ़ोत्तरी तत्काल प्रभाव से किया जाए।

बैठक में सर्वश्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, संरक्षक विजय कुमार बुधिया, डॉ. लखन लाल, हरिकृष्ण अग्रवाल, प्रो. (डा.) श्याम सुन्दर तुलस्यान आदि उपस्थित थे। छात्रवृत्ति में १०० रु. से लेकर ५०० रु. प्रति माह तक की वृद्धि की गई है।

भागलपुर निवासी शिक्षा प्रेमी व समाज सुधारक श्री लक्ष्मी नारायण डोकानिया के प्रयास से एक राजस्थानी छात्रा सुश्री प्रियंका चिरानियां को आई.आई.टी. कोचिंग वास्ते समाज से आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी गयी।

पटना : प्रादेशिक समिति की बैठक सम्पन्न

३१ जुलाई, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सत्र २००५-०७ की प्रादेशिक समिति की प्रथम बैठक प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला की अध्यक्षता में आयोजित हुई। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने कहा कि प्रादेशिक समिति का गठन एक लम्बी प्रक्रिया है पहले नाम मांगा जाता है। नाम नहीं आने के ९० दिनों के बाद मनोनयन किया जाता है। इसमें तीन माह का समय लग जाता है। आपने सुझाव दिया कि संविधान में संशोधन कर इसे प्रजातांत्रिक बनाना चाहिए। इसके लिए आजीवन सदस्यों द्वारा चुनाव होना चाहिए।

श्री झुनझुनवाला ने कहा कि राष्ट्रपति शासन लगने से बिहार की स्थिति एक दो सप्ताह ठीक रही फिर ज्यों का त्यों बना हुआ है। लोग भय के वातावरण में रह रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी तरह के आयोजन में सादगी लानी चाहिए। समाज किधर जा रहा है चिंतन करना जरूरी हो गया है।

महामंत्री श्री कमल नोपानी ने सम्मेलन के कार्यकलापों पर प्रतिवेदन पढ़कर सुनाया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश टिबड़ेवाल ने वर्ष ०४-०५ एवं ३० जून तक का लेखा जोखा सदस्यों के बीच वितरित किया। स्थाई कोष के प्रबंध न्यासी श्री द्वारका प्र. तोदी ने वर्ष २००४-०५ का लेखा जोखा एवं रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

प्रांतीय अध्यक्ष द्वारा बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन स्थाई कोष के रिक्त न्यासी पद पर सर्व श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया-बड़हिया, द्वारका प्रसाद तोदी, पटना, रामावतार पोद्दार, पटना, गिरधारीलाल सर्राफ पटनासिटी, नवलकिशोर सुरेका मुजफ्फरपुर, देवकीनंदन झुनझुनवाला, भागलपुर को मनोनीत किया गया।

झारखंड राज्य से संबंधित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पत्र पर चर्चा : प्रांतीय अध्यक्ष श्री झुनझुनवाला ने सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के दिनांक २३ मई, १७ जून एवं ५ जुलाई के पत्र अनुसूची-१ अनुसूची - २ एवं उक्त पत्रों के जवाब में लिखे पत्र अनुसूची-३ को पढ़कर सुनाया जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

जोरहाट में अध्यक्षीय कार्यालय का उद्‌घाटन

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल के कार्यालय परिसर में स्थानीय समाजसेवी श्री नेमीचन्द करनानी के करकमलों से अध्यक्षीय कार्यालय का उद्‌घाटन किया गया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

लखीमपुर : मेधावी छात्र-छात्राओं का अभिनंदन समारोह

१६.७.०५। लखीमपुर शाखा ने समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं तथा उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षान्त परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले लखीमपुर जिले के छात्रों का उत्साह बढ़ाने हेतु एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया।

कुल २७ मेधावी छात्र-छात्राओं को उक्त समारोह में सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र, सम्मेलन का मोमेन्टो, एक कलम तथा एक ज्ञानवर्द्धक पुस्तक दी गई।

समारोह की अध्यक्षता शाखाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद पारीक ने की, सम्मेलन के सलाहकार श्री सुरेश कुमार जैन तथा श्री हरनारायण अग्रवाल के साथ ही लखीमपुर महिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती पिस्ता देवी जैन मंच पर विराजमान थीं।

समारोह में पुरस्कार हेतु आमंत्रित छात्रा सुश्री जयश्री बोरगाँहाई की अपनी रचना 'अन्तर्दृष्टि' जो एक कविता पुस्तिका है, उसे सभा के अध्यक्ष को भेंट की गई। शाखा सचिव श्री हीरालाल जैन, राजेश मालपानी, गोपाल चौधरी, संजय साह, हरनारायण अग्रवाल, सह सचिव श्री शंकर राठी, संयुक्त सचिव श्री बलवान शर्मा आदि ने पुरस्कार वितरण में अपना सहयोग दिया। २००४ में उच्च माध्यमिक शिक्षान्त परीक्षा में हिन्दी विषय में सारे असम में सर्वोच्च अंक पाने वाली छात्रा सुश्री माला प्रधान को भी उक्त समारोह में पुरस्कृत किया गया।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

जबलपुर : श्री अजय विश्नोई का स्वागत

२८ जून। ''हमारा समाज देश का महत्वपूर्ण एवं सम्पन्न समाज है, देश की स्वतंत्रता में हमारे पूर्वजों की महती भूमिका रही है। आज भी गांव, नगर से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक इसके मजबूत संगठन हैं जो सामाजिक प्रगति में ही नहीं देश की आर्थिक प्रगति में भी अपना योगदान देते हुए प्रगतिशीलता के प्रकाश स्तम्भ बने हुए हैं।'' ये विचार हैं समाज के जुझारू कर्मठ एवं जनता के मसीहा, मध्य प्रदेश शासन में मनोनीत लोक निर्माण एवं नर्मदा घाटी विकास, राज्यमंत्री श्री अजय विश्नोई के, जिन्होंने विगत दिवस म.प्र. मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित उनके स्वागत समारोह के अवसर पर व्यक्त किए।

श्री विश्नोई ने कहा कि जबलपुर नगर में मारवाड़ी सम्मेलन की मजबूत एवं सक्रिय इकाई है जो प्रादेशिक इकाई के सहयोग से विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजन हमेशा करती रहती है। आपने जबलपुर नगर के विकास में समाज के सहयोग की आकांक्षा करते हुए बतलाया कि आज पुन: जबलपुर नगर के विकास की आवश्यकता है। मध्य प्रदेश स्तर पर व्यापक आन्याक्रान्ति आन्दोलन चल रहा है, सार्वजनिक हित को प्राथमिकता दी जा रही है, अवैध निर्माणों को हटाया जा रहा है, राष्ट्रीय सड़कों को ८० फीट चौड़ा बनाया जाएगा, जबलपुर नगर की सड़कें भी चौड़ी की जाएगी और जबलपुर नगर देश का एक सुन्दर नगर बनेगा।

समारेह के आयोजक एवं मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी ने कहा कि मध्य प्रदेश में यह मारवाड़ी समाज की विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण उपलब्धि है। उनके मंत्री बनने पर सारा समाज हर्ष का अनुभव कर रहा है, उन्हें बधाइयां दे रहा है, गौरवान्वित है। इस अवसर पर जबलपुर मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष प्रो. मंगलचंद टांटिया, वर्तमान सचिव श्री प्रभात अग्रवाल, जबलपुर महिला मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से श्रीमती चित्रादेवी व सुनीति जी तथा मध्य क्षेत्रीय महेश्वरी युवा संगठन के महामंत्री श्री नवनीत माहेश्वरी भी उपस्थित थे।

सौभाग्य से प्रान्तीय अध्यक्ष मुकुन्ददास माहेश्वरी की साठवीं सालगिरह का शुभ संयोग भी २८ जून को था। सभी उपस्थितों ने उन्हें स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल शुभकामनाएं दीं।

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोल्हापुर : बाढ़-पीड़ितों को मदद

विगत माह लगातार १२ दिनों तक प्रचण्ड वर्ष के कारण महाराष्ट्र के १८ जिलों में आई भयंकर बाढ़ से काफी बड़ी मात्रा में धन-जन की हानि हुई। इस आपद्काल में सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बंग, प्रादेशिक महामंत्री श्री ललित गांधी तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका के नेतृत्व में सम्मेलन की प्रदेश इकाई तथा विभिन्न शाखाओं द्वारा बाढ़ पीड़ितों को भोजन, अन्नछत्र, अनाज, कम्बल, बर्तन आदि प्रदान कर सहायता की गई। बाढ़ पीड़ितों के पुनर्वास के लिए गठित निधि से एक लाख रुपये का नगद योगदान भी दिया गया।

१०० वर्ष के इतिहास में महाराष्ट्र में प्रथम बार आए इस भीषण महाप्रलय में करीब ९०० लोग मारे गये एवं ३० हजार लोगों की स्थिति गंभीर है। लाखों लोग बेघर हो गए हैं। महामारी का प्रकोप फैला हुआ है। आज भी महाराष्ट्र के बाढ़ पीड़ितों को दवाइयां, कम्बल, बर्तन एवं अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं की काफी मात्रा में जरूरत है। भारत की सभी शाखाओं से इस पुण्य कार्य में योगदान देने की विनम्र प्रार्थना है।

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

रांची : कार्यकारिणी एवं प्रांतीय समिति की संयुक्त बैठक सम्पन्न

१४ अगस्त। झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति तथा प्रांतीय समिति की संयुक्त बैठक प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया की अध्यक्षता में की गई। श्री डालमिया ने प्रांतीय सम्मेलन के नये पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की घोषणा की एवं सम्मेलन के संगठन को सशक्त बनाने पर जोर दिया। प्रांतीय महामंत्री श्री धर्मचन्द जैन रारा ने सम्मेलन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं वर्ष २००५-०६ के लिए अनुमानित बजट का विवरण प्रस्तुत किया। सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया ने वर्ष २००४-०५ का आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। सर्वसम्मति से इस वर्ष के अन्त तक देवघर में द्वितीय प्रांतीय अधिवेशन का आयोजन करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में सर्वश्री राजकुमार केडिया, गोवर्द्धन गाड़ोदिया, विनय सरावगी, सुरेश अग्रवाल, प्रदीप जैन बाकलीवाल, प्रदीप तुलस्यान, प्रेम कटारुका, धर्मचन्द बजाज, कमल केडिया, परमेश्वर लाल गुटगुटिया, रतन बांका, बसन्त मित्तल उपस्थित थे। प्रांतीय उपाध्यक्ष विश्वनाथ नारसरिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

बैंकाक में महिला सम्मेलन की विदेश शाखा की स्थापना

११ जून २००५। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती प्रेमा पंसारी के नेतृत्व में पश्चिम उड़ीसा से ३० महिलाओं के एक दल सांस्कृतिक आदान-प्रदान हेतु सिंगापुर, मलेशिया एवं थाईलैण्ड का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान श्रीमती पंसारी ने बैंकाक में मारवाड़ी महिला समिति की स्थापना की एवं श्रीमती पुष्पा सराफ को बैंकाक शाखा की अध्यक्षा नियुक्त की। श्रीमती सराफ बैंकाक में २५ वर्षों से रह रहे हीरे के व्यापारी श्री सुशील सराफ की पत्नी है। बैंकाक मारवाड़ी महिला समिति की सदस्याओं ने भारत के गांवों की प्रगति में मदद करने का वादा किया। सदस्याओं ने विदेश की स्वच्छता एवं प्रदूषण रहित वातावरण से प्रभावित होकर अपने देश को भी वैसा ही स्वच्छ व प्रदूषण रहित बनाने की प्रेरणा प्राप्त की। श्रीमती प्रेमा पंसारी के अलावा इस दल में सम्मिलित श्रीमती मंजू सराफ, मंजू लाठ, पुष्पा सराफ, दुर्गा अग्रवाल, सुमित्रा अग्रवाल, किरण लाठ, सम्बलपुर से, श्रीमती प्रेमा अग्रवाल, लक्ष्मी अग्रवाल, दुर्गा अग्रवाल, गंगा अग्रवाल, पुष्पा अग्रवाल, बलांगीर से श्रीमती किरण बाधान, शकुन्तला खेतान, संतोष बोंदिया, झारसुगुड़ा से श्रीमती सुमित्रा अग्रवाल, नूतन अग्रवाल बरगढ़ से, श्रीमती अलका अग्रवाल खरियार से, बामड़ा से श्रीमती लीला लाठ, अंगुल से श्रीमती सुशीला शाह एवं श्रीमती रेखा राठी औरंगाबाद से की भारत वापसी २५ जून को हुई।

पटना : उद्योग मेला २८ सितम्बर से २ अक्टूबर

बिहार महिला उद्योग संघ द्वारा लघु-कुटीर घरेलू उद्योग के माध्यम से महिलाओं-लड़कियों को स्वरोजगार की ओर प्रेरित करने हेतु पिछले नौ सालों से लगातार प्रयास जारी है। इस दिशा में संघ का दसवां वार्षिक उद्योग मेला २८ सितम्बर से २ अक्टूबर ०५ कुल पांच दिनों के लिए मिलर स्कूल ग्राउण्ड में लगाया जाएगा। १०x१० के एक स्टाल का चार्ज मात्र पच्चीस सौ रुपये हैं। मेले की विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें- ०६१२२२६३३८२ मोबाईल नं. ९८३५२४५७७६। श्रीमती पुष्पा चोपड़ा, अध्यक्षा।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

नि:शुल्क एक्युप्रेशर चिकित्सा शिविर का आयोजन

९ अप्रैल। मोतीपुर युवा मंच के तत्वावधान में दस दिवसीय एक्युप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण का नि:शुल्क शिविर का उद्घाटन विधायक ब्रजकिशोर सिंह ने किया। श्री सिंह ने कहा कि विगत कई वर्षों से मारवाड़ी युवा मंच यहां जनता की सेवा के लिए तत्पर है तथा उसकी सेवा में अग्रणी भूमिका निभायी है। आज नि:शुल्क शिविर लगाकर जनता की सेवा करने के लिए यह युवा मंच धन्यवाद का पात्र है। नगरपंचायत अध्यक्ष नन्द कुमार राय ने कहा कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य में यह युवा मंच सबसे आगे है तथा पीड़ितों की सेवा में सदस्यों ने सराहनीय भूमिका निभायी है। युवा मंच के प्रांतीय सहायक मंत्री संजय चौधरी ने विधायक योजना से आतुर वाहन की मांग की जिसे पूरा किए जाने का आश्वासन विधायक ब्रजकिशोर सिंह ने दिया। शिविर की अध्यक्षता संदीप जालान ने की तथा मंच संचालन संचय चौधरी ने किया। शिविर में सुप्रसिद्ध चिकित्सक एस.के. रमेश, परमेश्वरलाल गिन्दोरिया, मनोज सिंह, रमेश अग्रवाल, प्रेमचन्द नाथानी, शिव कुमार पोद्दार, प्रमुख गजाधर राय, अशोक ठाकुर, मुरारी नथानी, मनोज अग्रवाल सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

मोतीपुर : पृथ्वी दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन

२५ अप्रैल। मारवाड़ी युवा मंच एवं पर्यावरण क्लब के नेतृत्व में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि कृषि वैज्ञानिक डा. एस.के. पांडे ने मोतीपुर बाजार सहित ग्रामीण क्षेत्र में अधिकाधिक वृक्षारोपण करने का आह्वान किया था वृक्ष के महत्व पर प्रकाश डाला। इसकी अध्यक्षता कर रहे पर्यावरण क्लब के अध्यक्ष चौधरी संजय अग्रवाल

ने वृक्ष लगाओ पृथ्वी बचाओ पर्यावरण को संतुलित बनाओ का नारा लगाया। संगोष्ठी में उपस्थित दर्जनों वक्ताओं ने पर्यावरण की रक्षा एवं प्रदूषण से त्रस्त वायु, जल एवं ध्वनि पर अपने-अपने विचार प्रकट किये और हर व्यक्ति को दो-दो वृक्ष रोपने की बात कही। संगोष्ठी में मनोज अग्रवाल, राजकुमार राजू, विपुल कुमार, विजय किशोर सिंह, चौधरी श्याम सुन्दर सहित दर्जनों कार्यकर्त्ताओं के साथ-साथ मोतीपुर क्षेत्र के सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे।

मोतीपुर : पुरस्कृत करने की मांग

२५ अप्रैल। मोतीपुर पर्यावरण क्लब के अध्यक्ष चौधरी संजय अग्रवाल ने सिवान के जिलाधिकारी सी के अनील एवं आरक्षी अधीक्षक रत्न संजय को सिवान के सांसद मो. शहाबुद्दीन के घर से कानूनी प्रक्रिया से जानवरों की खाल एवं संरक्षित जानवर बरामद किए जाने पर धन्यवाद का पात्र बताते हुए पुरस्कृत करने की मांग राज्यपाल से की है।

मोतीपुर : व्यवसायी की हत्या का विरोध

१३.५.०५। बिहार प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच ने बेतिया में मंच के सदस्य एवं व्यवसायी श्री रवि झुनझुनवाला द्वारा रंगदारी नहीं देने पर उनकी हत्या कर दिए जाने का तीव्र विरोध करते हुए मुजफ्फरपुर प्रक्षेत्र के अपर-आरक्षी महानिदेशक श्री बी.एस. जयन्त एवं बिहार के राज्यपाल महामहीम सरदार बूटा सिंह को ज्ञापन सौंपकर हत्यारों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की है।

मोतीपुर : बच्चों को स्तनपान के प्रति जागरुकता अभियान

मंच के प्रांतीय मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल सहित मंच के सभी सदस्यों द्वारा प्रखण्ड क्षेत्र का दौरा कर बच्चों को स्तनपान के प्रति माताओं में जागरुकता लाने का अभियान जारी है।

मोतीपुर : प्रेमचन्द जयन्ती समारोह एवं जनसंख्या पर सेमिनार आयोजित

मोतीपुर शाखा के तत्वावधान में हिन्दी जगत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द की १२५वीं जयंती मनाई गई एवं इस अवसर पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मंच के प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल सहित प्रो. श्रवण मोदी, मुरारी नाथानी, मनोज अग्रवाल, अनिल अग्रवाल आदि ने गोष्ठी को सम्बोधित किया। मंच द्वारा जनसंख्या विषयक सेमिनार का भी आयोजन किया गया एवं जनसंख्या पर नियंत्रण लाने का आह्वान किया गया।

पानापुर : विदाई समारोह का आयोजन

२३ अप्रैल। मारवाड़ी युवा मंच एवं पर्यावरण क्लब के संयुक्त तत्वावधान में गन्ना प्रजनन संस्थान केन्द्र के मोतीपुर प्रभारी डा. एस.के. पांडेय का विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के एस.रामानुजम, आर.के. खन्ना, अशोक कुमार, आरडी यादव, नंदकिशोर निराला, चौधरी संजय अग्रवाल, चौधरी श्याम सुन्दर, विनय किशोर सिंह, मुरारी नाथानी, विपुल कुमार, राजेश कुमार राजू, वैभव कुमार आदि मौजूद थे।

कांटाबांजी : टी.डी.एम. की मांग

युवा मंच कांटाबांजी शाखा मंत्री युवा मुकेश जैन ने दूरसंचार विभाग के टी.डी.एम., बलांगीर से कांटाबांजी नगर में जल्द सेन्ट्राक्स सिस्टम चालू करने एवं टी.डी.एम. से पोस्ट पेड मोबाईल के बिल की भुगतान की सुविधा अतिशीघ्र प्रारम्भ करने हेतु मांग की है।

कांटाबांजी : सांसद द्वारा एम्बुलेन्स प्रदान

श्रीमती संगीता सिंहदेव ने अपने सांसद निधि से युवा मंच कांटाबांजी को एम्बुलेंस प्रदान किया। एम्बुलेंस लोन हेतु कांटाबांजी से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द अग्रवाल, राष्ट्रीय सह संयोजक श्री सुभाष अग्रवाल, राष्ट्रीय सभा सदस्य श्री राजेश अग्रवाल, प्रान्तीय सभा सदस्य श्री कैलाश अग्रवाल एवं अन्य सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री सुभाष अग्रवाल को एम्बुलेंस समिति का संयोजक नियुक्त किया गया। जिस व्यक्ति को एम्बुलेंस की आवश्यकता है वह मोबाईल नं. ९४३७१ ४६२०६ से सम्पर्क कर सकता है।

सांसद श्रीमती संगीता सिंहदेव ने मंच के पटनागढ़ व टिटिलागढ़ शाखा को एक-एक एम्बुलेंस एवं बलांगीर शाखा को एक शव वाहिनी प्रदान करने का वादा किया है।

कांटाबांजी : सम्पादक की आपत्तिजनक टिप्पणी की निंदा

भुवनेश्वर से प्रकाशित उड़ीसा दैनिक समाचार पत्र 'धरित्री' के सम्पादकीय कालम में 'एड़ा कि भक्त' (ये कैसे भक्त) शीर्षक से प्रकाशित समाचार के विरोध में स्थानीय मारवाड़ी युवा मंच ने सम्पादक को पत्र लिखकर तीव्र निंदा की है।

'धरित्री' के सम्पादक श्री तथागत सतपथी जो कि लोकसभा सदस्य भी हैं ने मारवाड़ी समाज पदार्थों में अपमिश्रण करने, कपड़ा कम नापने, बिजली तथा सेल्स टैक्स की चोरी करने एवं विभिन्न अधार्मिक कार्यों में लिप्त रहने के साथ ही उनका

व्यवसाय पर मारवाड़ियों द्वारा कब्जा जमाने जैसी अव्यावहारिक टिप्पणी कर अपनी निम्नस्तरीय मानसिक बुद्धि का परिचय दिया है।

मंच ने संपादक से पत्राचार कर जानकारी दी है कि मारवाड़ी समाज का देश को स्वाधीनता दिलाने से लेकर आर्थिक विकास तक अतुलनीय योगदान रहा है। मारवाड़ी समाज ने राम मनोहर लोहिया, जमुनालाल बजाज, सर गंगाराम, घनश्यामदास बिड़ला तथा अनेको स्वतंत्रता संग्रामी इस देश को दिये हैं। देश के बड़े-बड़े उद्योग, शिक्षण संस्थायें, चैरिटेबल ट्रस्ट, धर्मशालाएं, मंदिर मारवाड़ी समाज की ही देन है।

सम्पादक व सांसद द्वारा मारवाड़ी समाज पर की गई अशोभनीय टिप्पणी अत्यंत ही दुर्भाग्यजनक व निन्दनीय है। मारवाड़ी युवा मंच सम्पादक से मांग करता है कि अपनी भूल स्वीकार कर अपने समाचार पत्र 'धरित्री' में खेद प्रकट करें एवं देश के करोड़ों धर्मनिष्ठ, दानशील, सेवाभावी तथा सरल हृदय देश प्रेमी मारवाड़ी समाज से माफी मांगे।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करने की योजना

विगत वर्षों की भांति इस बार भी वृहत्तर कलकत्ता प्रादेशिक माहेश्वरी सभा द्वारा विभिन्न अंचलों में निवास करने वाले स्वजातीय परिवारों के उन मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जायेगा, जिन्होंने वर्ष २००५ में आयोजित माध्यमिक परीक्षा में ८५%, उच्च माध्यमिक में ८०%, स्नातक (ग्रेजुएशन) में प्रथम श्रेणी अथवा सीए, सीएस, एलएलबी, आईसीडब्लूए, एमबीए चिकित्सा तकनीकी या अन्य किसी क्षेत्र में विशिष्टता हासिल की हो। निवेदन है कि उक्त में से किसी एक भी क्षेत्र में योग्यता रखने वाले छात्र-छात्रा की अंक तालिका (मार्क शीट) या प्रगति पत्र की अभिप्रमाणित (एटेस्टेड कापी) आवेदन के साथ अध्यक्ष- श्री जगदीश चन्द्र एन. मूंदड़ा, ७-डी, लेंसडाउन हाईट, ६, लेंसडाउन रोड, कोलकाता-७०००२०, दूरभाष : २४७६-५७३१, २४५५-९८२५, मोबाइल ९८३०० ४७५२१ अथवा संयोजक- श्री देवकिशन करनानी, १७३, महात्मा गांधी रोड, दूसरा तल्ला, कोलकाता-७००००७, दूरभाष : २२६८-६८२४ (का) २६७२-३४१६ (नि.) ९८३०११८५७० (मो.) के पास दिनांक ९ सितम्बर २००५ को संध्या ६ बजे तक अवश्य ही जमा करवाने की कृपा करें। 'प्रतिभा सम्मान समारोह' दि. २४ सितम्बर २००५ को सायं ५ बजे 'कलाकुंज प्रेक्षागृह' (कला मन्दिर तल कक्ष) कोलकाता में आयोजित किया जायेगा।

कानपुर : राजस्थान एसोसियेशन का वार्षिक चुनाव

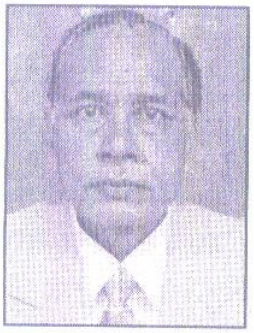

श्री दलपत चन्द जैन अध्यक्ष, राजस्थान एसोसिएशन कराची खाना कानपुर

कानपुर में सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक, चिकित्सा, लोकोपकारी कार्यों के लिए विशिष्ट स्थान रखने वाली प्रवासी राजस्थानियों की संस्था 'राजस्थान एसोसियेशन' का वर्ष २००५-०६ के लिए कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें श्री दलपत चन्द जैन को पुन: अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उपाध्यक्ष श्री विजय प्रकाश माहेश्वरी, महामंत्री श्री सत्येन्द्र माहेश्वरी, मंत्री श्री करनराज बोहरा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम नारायण सोमानी तथा कार्यकारिणी सदस्य सर्वश्री बलदेव प्रसाद जाखोदिया, भीकम चन्द चौरड़िया, दिलखुश कुमार जैन, शिवरतन नेमानी, लूलकरण लोढ़ा, प्रहलाद दास बांगड़, सुशील कुमार तुलस्यान, मुरलीधर बाजोरिया, बच्छराज सेठिया मदन गोपाल तापड़िया को चुना गया।

अध्यक्ष श्री दलपत चन्द जैन ने बताया कि राजस्थान एसोसियेशन की स्थापना सन् १९७२ में स्व. बी.आर. कुम्मटसाहब, स्व. हजारीमल जी बाँठिया, स्व. बद्रीप्रसाद जी भोजनगरवाला, श्री मोहनलाल जी जैन आदि ने की थी। भावी योजनाओं में बल्लभ राज सभागार को पूर्णतया वातानुकूलित करना, द्वितीय राजस्थान भवन में सुसज्जित पैथालाजी तथा कम्प्यूटर शिक्षा प्रारम्भ करने की है।

कोलकाता : डा. अवस्थी की रचना यात्रा कार्यक्रम सम्पन्न

२८ जुलाई। 'मेरी जन्मभूमि बैसवाड़ा अंचल की साहित्यिक चेतना तथा कलकत्ता की रचनात्मक ऊर्जा ने मुझे सदा प्रेरणा दी है। 'ज्योत्सना' संस्था के माध्यम से मेरी साहित्यिक सक्रियता बढ़ी और यहां के साहित्यकारों में पं. गुलाब रत्न वाजपेयी, प्रो. कल्याण मल लोढ़ा तथा आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने मुझे सदैव प्रेरित प्रभावित किया। अपनी माटी से जुड़ाव ही मेरी रचना का मूल स्रोत हैं। ये उद्‌गार है डा. अरुण प्रकाश अवस्थी के जो श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की ओर से पुस्तकालय कक्ष में आयोजित 'मेरी रचनायात्रा' के दूसरे व्याख्यान में बोल रहे थे।

पुस्तकालय के अध्यक्ष डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने मेरी रचना यात्रा शीर्षक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अवस्थी जी की रचनायात्रा के महत्वपूर्ण विंदुओं का स्पर्श किया

आयोजन के प्रधान अतिथि श्री लक्ष्मीकांत तिवारी ने डॉ. अवस्थी को आचार्य विष्णुकांत शास्त्री का तैल चित्र भेंट किया। श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अवस्थी जी की रचनात्मक क्षमता एवं व्यापक अध्ययन की प्रशंसा की।

अतिथियों का स्वागत किया सर्वश्री महावीर बजाज, गोविन्द नारायण काकड़ा एवं महावीर प्रसाद नारसरिया ने। संचालन किया पुस्तकालय की साहित्य मंत्री डा. ऊषा द्विवेदी ने। समारोह को सफल बनाने में श्री अरुण मल्लावत, नन्दकुमार लढ़ा, गजानन्द राठी आदि सक्रिय थे।

कोलकाता : कुमारसभा पुस्तकालय का वार्षिक अधिवेशन एवं चुनाव सम्पन्न

६ अगस्त। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का वार्षिक अधिवेशन एवं नयी कार्य समिति का चुनाव, चुनाव अधिकारी श्री राजाराम बियानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। वर्ष २००५-०६ के लिए नयी कार्य समिति के सभापति डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं उप सभापति श्री कृष्णस्वरूप दीक्षित तथा श्री गोविन्द नारायण काकड़ा चुने गये। मंत्री श्री महावीर बजाज एवं उपमंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत तथा श्री अरुण सोनी नियुक्त हुए। श्री नन्द कुमार लढ़ा को अर्थमंत्री एवं डा. ऊषा द्विवेदी को साहित्य मंत्री नियुक्त किया गया। कार्यकारिणी समिति के अन्य सदस्यों में हैं सर्वश्री जुगल किशोर जैथलिया, डा. विश्रांत वशिष्ठ, नेमचंद कन्दोई, घनश्याम दास बेरीवाल, जगदीश प्रसाद शाह, विमल लाठ, रामगोपाल सूंधा, अशोक गुप्ता, गजानन्द राठी, दाऊलाल सिंघानिया, संजय रस्तोगी, श्रीमती दुर्गा व्यास, श्रीमती सुधा जैन एवं विधुशेखर शास्त्री। लेखा परीक्षक एम. गुप्ता एण्ड कं., कलकत्ता को तय किया गया।

हैदराबाद : महेश नवमी पर्व पर स्वास्थ्य परीक्षण अन्नदान और मिष्ठान्न वितरण सम्पन्न

आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में रोगियों की जांच के बाद उन्हें नि:शुल्क दवाएं वितरित की गयी। आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष एवं संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि यह पर्व सेवा, सदाचार और त्याग का संदेश देता है। अत: सभी माहेश्वरी भाइयों एवं बहिनों को यह पर्व उत्साहपूर्वक मनाना चाहिए। स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में दामोदरदास बंग, विमल डालिया, कमलकिशोर जाजू, लक्ष्मीनिवास सारडा, रमेश कुमार आदि ने अपनी सेवाएं प्रदान की। मध्यान्ह में संगठन द्वारा अन्नदान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सैकड़ों असहाय और निराश्रित लोगों ने भोजन ग्रहण किया। सायंकाल छात्रों को मिष्ठान्न वितरित किया गया।

श्री हनुमान परिषद, तारकेश्वर में आयोजित सावन मेला के उद्घाटन अवसर पर लिए गए चित्र में बाएं से सर्वश्री भानीराम सुरेका, रामस्वरूप अग्रवाल, के.के. सिंहानिया, दमकल व आपातकाल मंत्री प्रतीम चटर्जी, मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, नेपाल के डिपुटी कान्सल जनरल डॉ. गोविन्द प्रसाद आदि।

तारकेश्वर : श्री हनुमान परिषद के सावन मेला का उद्घाटन

श्री हनुमान परिषद द्वारा तारकेश्वर में सावन मेला का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित थे पश्चिम बंगाल के दमकल व आपातकाल मंत्री श्री प्रतीम चटर्जी, बेलारूस के कान्सल जनरल एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, नेपाल के डिपुटी कांसल जनरल डॉ. गोविन्द प्रसाद, श्री रामस्वरूप अग्रवाल, के.के. सिंहानिया आदि।

नैनीताल : डा. प्रमोद अग्रवाल कुमाऊं मंडल प्रमुख

हल्द्वानी उद्योग व्यापार मंडल हल्द्वानी एवं जिला नैनीताल के प्रवक्ता डॉ. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी को अखिल भारतीय मानवाधिकार संगठन की उत्तरांचल इकाई द्वारा कुमाऊं मंडल प्रमुख का पदभार सौंपा गया है।

भोपाल : श्री गोयल सर्वसम्मति से महासभा में पुन: अध्यक्ष निर्वाचित

मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा की बैठक में सर्वसम्मति से श्री डी.पी. गोयल पुन: तीन वर्षों के लिए अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

विधवा विधुर परिचय सम्मेलन

मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा द्वारा अग्रवाल समाज के विधवा-विधुर विकलांग तलाकशुदा और अधिक आयु के प्रत्याशियों का परिचय सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में २०० से अधिक विधवा व विकलांग पुरुष एवं महिलाओं ने मंच पर आकर अपना परिचय दिया।

रायपुर : आतंकवाद से निपटने के लिए उच्च स्तरीय व्यापारी दल का गठन आवश्यक

अखिल भारतीय व्यापार मंडल के कार्यकारी अध्यक्ष मांगीलाल सोनी ने पत्रकार वार्ता में कहा कि देश में पहली बार केन्द्र शासन द्वारा कश्मीर में विगत लगभग पंद्रह वर्षों से चल रहे आतंकवाद से निपटने एवं व्यापार उद्योग को पुन: सुचारू रूप से चलाने हेतु एक उच्च स्तरीय व्यापारी दल का गठन कर विभिन्न व्यापारियों के संगठन से मिलकर उनकी मूलभूत समस्याओं को समझ कर केन्द्र शासन को व्यापारियों एवं उद्योगपतियों की व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने, अपने विचार देने की पहल की। श्री सोनी ने जानकारी दी कि केन्द्र शासन द्वारा जम्मू-कश्मीर राज्य को ३७००० करोड़ रुपये की पंचवर्षीय योजना के तहत खर्च करने की योजना बनाई गई है।

रिसड़ा : 'महेश नवमी' के उपलक्ष्य पर 'इंद्रधनुषी संध्या' एवं सहभोज का आयोजन

३ जुलाई २००५। युवा संगठन, रिसड़ा द्वारा आयोजित 'इन्द्रधनुषी संध्या एवं सहभोज' कार्यक्रम का उद्घाटन श्री पुरुषोत्तम दास मीमानी ने किया, बतौर अतिथि श्री जगमोहनदास पलोड़े, श्रीमती रत्ना दे नाग (विधायक), युवा संगठन के प्रदेश अध्यक्ष श्री बलदेव बाहेती उपस्थित थे। जिनका स्वागत अध्यक्ष श्री प्रकाश काबरा, सचिव श्री विजय डागा एवं कार्यक्रम के संयुक्त संयोजक श्री विनोद राठी एवं श्री राजेश चाण्डक ने किया। महेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल के पूर्व सभापति श्री अशोक बियानी एवं श्री महेश सोमानी को भी सम्मानित किया गया। श्री विजय सोनी द्वारा गीत-संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री राजेश बियानी, मदन गोपाल राठी, कुलदीप गट्टानी एवं हरीश काबरा का सहयोग उल्लेखनीय रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री विनोद बियानी ने किया।

रायपुर : श्री मोहनलाल खण्डेलवाल रोटरी क्लब के अध्यक्ष

१ जुलाई। श्री मोहनलाल खण्डेलवाल (आमेरिया) रोटरी क्लब, रायपुर के अध्यक्ष पद पर पुनर्निर्वाचित हुए। श्री खण्डेलवाल का स्थानीय सामाजिक और सार्वजनिक संस्थाओं में सक्रिय भूमिका रहती है।

बधाई

महामनीषी श्री कन्हैया लाल सेठिया को डाक्टरेट की उपाधि

महामनीषी प्रख्यात दार्शनिक कवि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी- पद्मश्री श्री कन्हैयालाल सेठिया को राजस्थान विश्व विद्यालय, जयुपर ने उनकी विशिष्ट साहित्यिक, सामाजिक, पर्यावरण- पानी- शिक्षा चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए अतुलनीय सेवाओं के लिए 'डाक्टर आफ लेटर्स' देने का निर्णय लिया है। राजस्थान विश्व विद्यालय के उपकुलपति श्री के.एल. शर्मा ने श्री सेठिया को पत्र द्वारा सूचित किया है। श्री सेठिया ने हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू में ४० से ज्यादा पुस्तकों का सृजन किया है। श्री सेठिया का चिन्तन मौलिक है एवं दर्शन की गूढ़तम अभिव्यक्ति बहुत ही कम शब्दों में बड़ी सरसता से करने की अद्भुत क्षमता है। गागर

में सागर समाने में सक्षम श्री सेठिया को ११ सितम्बर में ८६ वर्ष पूर्ण होने को है। शारीरिक रूप से काफी अस्वस्थ होते हुए भी मानसिक रूप से आज भी अत्यन्त सक्रिय एवं जागरुक हैं। श्री सेठिया को साहित्य मनीषी, साहित्य वाचसपति, मूर्ति देवी पुरस्कार, साहित्य अकादमी- दिल्ली उदयपुर से पुरस्कृत एवं अमेरीकन कांग्रेस आफ लाईब्रेरीज में विशिष्टतम लेखक के रूप में मान्यता प्रदान की है। श्री सेठिया महावीर सेवा सदन, कलकत्ता (विकलांग को पांव) के संस्थापक हैं, जिसके इकबालपुर में ३.५ (साढ़े तीन करोड़) की लागत से नया भवन बन रहा है।

आत्मा राम जी सोंथलिया

कोलकाता : आत्माराम सोंथलिया को सम्मान

१० अगस्त। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य एवं महानगर के सुप्रतिष्ठित व्यवसायी व सामाजिक कार्यकर्त्ता आत्माराम सोंथलिया को भारत सरकार के सामाजिक न्यास एवं अधिकार मंत्रालय ने नेशनल काउंसिल फार ओल्डर पर्सन्स के सम्मानित सदस्य के रूप में नियुक्त किया है। श्री सोंथलिया मर्चेन्ट चेम्बर आफ कामर्स, कोलकाता के ट्रस्टी एवं पूर्व अध्यक्ष तथा एसोसियेटेड चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज नयी दिल्ली के कार्य समिति के सदस्य हैं। सम्मेलन परिवार की ओर से श्री सोंथलिया को हार्दिक बधाई।

ताऊ शेखावाटी की रचना कक्षा ११वीं के लिए चयनित

प्रसन्नता की बात है कि राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि व लेखक 'ताऊ शेखावाटी' की रचना 'मीरॉ राणा' जी संवाद' का कुछ अंश राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा कक्षा ११वीं के लिए चयनित किया गया। ताऊ शेखावटी के लिए यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, इससे लाखों विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। ताऊ शेखावटी को हार्दिक बधाई।

शोक सभा / श्रद्धांजलि

शिवसागर : श्रीमती चम्पादेवी खण्डेलिया का स्वर्गवास

समाज की वयोवृद्धा, धर्मपरायण महिला श्रीमती चम्पादेवी खण्डेलिया, धर्मपत्नी श्री सीताराम खण्डेलिया का १४.७.०५ को हुए निधन से समाज एवं पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर शाखा के सभी सदस्यों / सदस्याओं को काफी दु:ख हुआ है। परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की चिर-शांति की प्रार्थना करते हैं।

किशनगंज - श्री पूरणमल अग्रवाल अनन्त यात्रा पर

पूरणमल अग्रवाल (भारुका) का जन्म १९३४ ई. में प्राचीन पूर्वी बंगाल के बोगड़ा जिला मुख्यालय में हुआ। इनका पैतृक निवास राजस्थान के नागौर जिलान्तर्गत कीचक डीडवाना नामक स्थान में है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा देवघर, बिहार (वर्तमान झारखंड) में हुई। सेंट जेवियर्स कॉलेज कोलकाता से इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय को प्राथमिकता दिया। पांच भाईयों एवं तीन बहनों में सबसे छोटे भाई पूरणमलजी पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ गए। कालान्तर में किशनगंज स्थित दवा व्यवसाय में ख्यातिप्राप्त व्यक्ति के रूप में इनकी पहचान बनी। यहीं इन्होंने अपना स्थायी निवास बनाया एवं जीवन पर्यन्त किशनगंज से जुड़े रहे। निर्भिक, कठोर निर्णय करने में सक्षम एवं विवादों के समाधान में विधि सम्मत सलाह के धनी व्यक्ति तथा कानूनी राह पर अडिग रहने वाले व्यक्ति के रूप में इन्हें समाज हमेशा याद करता रहेगा।

ये शहर के अति प्राचीन 'राजेन्द्र पुस्तकालय' के सचिव लम्बे समय तक रहे, जिसका उद्घाटन भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद के हाथों किया गया था। मारवाड़ी मर्चेन्ट कमिटि के अध्यक्ष के रूप में इनका कार्यकाल प्रशंसनीय रहा। १९८० से २००३ तक किशनगंज जिला केमिस्ट एवं ड्रगिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर रहे। ये आजीवन इस संगठन के संरक्षक रहे। स्व. अग्रवाल समाज सेवी श्री ताराचन्द पाटोदिया के बड़े बहनोई थे। अपने पीछे ये धर्मपरायण पत्नी श्रीमती गीता देवी तीन पुत्र एवं दो पुत्रियां, पोता-पोती, नाती-नतनियों से भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

गुवाहाटी : श्री वेणी प्रसाद शर्मा का स्वर्गवास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष एवं पूर्वोत्तर सम्मेलन के पूर्व पदाधिकारी सुप्रसिद्ध समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री वेणी प्रसाद शर्मा का गत १ जुलाई को वैकुंठवास हो गया। श्री शर्मा का सम्मेलन के प्रति गहरा लगाव रहा है। उनके निधन से सम्मेलन परिवार आहत है। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं उनके शोकाकुल परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति दें।

With best Compliments from

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
Kolkata - 700001
Ph : 2242-2585, 2242-4654
Fax (91-33) 2242-2749
E-mail rohitashwaj@hotmail.com

AUTHORISED DISTRIBUTOR

FinOlex

Gets people together

PVC PIPES & FITTINGS

Mfg.

Finolex Industries Ltd.

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

SREI, committed to the growth of the country's core sector has gone far beyond providing finance and refinance for construction equipment and spare parts.

Today, SREI provides valuable inputs as financiers and consultants across infrastructure projects and roads, power and ports in particular.

Fuels the growth in the Indian transportation sector through attractive financial schemes for the commercial vehicle segment and automobiles.

Serves the international traveller through convenient foreign exchange transactions.

Creates a better environment by funding equipment and projects that are environmentfriendly.

Ensures complete protection by providing an entire range of insurance services.

Provides a range of investment oppurtunities through Government bonds, securities, fixed deposits and mutual funds.

Over the years SREI has built considerable expertise in the management of assets and financial services.

With its widespread network across the country, SREI is ready to meet growing customer needs with tailor-made solutions.

SREI is totally prepared and committed to stand by you to meet your diverse requirements as a complete finance solutions company.

Financially yours,

SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

EQUITY PARTNERS IFC USA • DEG GERMANY • FMO HOLLAND

SREI Equik SREI Requik SREI Parts SREI Core SREI Auto SREI Monitor SREI Bhaskar

SREI Forex SREI Life SREI General SREI Money SREI Treasure SREI Capital

Viswakarma, 86C Topsia Road (South), Kolkata 700046 • Phone : 22850112-15/024-27 • Fax : 22857542
New Delhi Phone 23322274/23360984/23314030 • Bhubaneshwar Phone : 2545290/2522560/2545177
Mumbai Phone : 24968639/24968639/24973708 • Chennai Phone : 28555584/28555470-71
Hyderabad Phone : 55567919/55567920 • Bangalore Phone : 2276727/2271265/2235006

© 2001 SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,